इस्लाम दर्शन

IN HINDI (India)

Supervised by

Ministry of Endowment and Islamic Affairs

Financed by

Qatar Endowment Authority

अल्लाहके नामपर , जो सबसे ज्यादा परोपकारी और परम दयालु है ।

अपनी पहचान को बरकरार रखते हुए कतर के राज्य ने दूसरी संस्कृती व सभ्यताओं के लिए अपने दरवाजे खोल दिए हैं । अपनी अदभुत रचना और सर्पाकार मिनार के साथ ‘ फनार ’(कतरी इस्लामी संस्कृति केन्द्र) सम्पूर्ण मानव जातिको प्रकाश प्रदान करके मार्गदर्शन करनेवाले सबसे बडे महत्तवपूर्ण स्थानों में से एक है ।

कतरी सभ्यताका स्रोत इस्लामिक सभ्यता ही है और हमारा मकसद इस किताब के जरिए सिर्फ इस देशका नहीं बल्की संसार के एक सबसे बडे समुदाय के आस्थाका बुनियदी गाइड आपलोगों को कराना है । जीवन का अर्थ व इसकी वास्तविक प्रकृति पर विचार करने वाले व आजकलके अनेक भ्रान्तियों में से कुछएक को दूर करनेका प्रयास करनेवाले आधुनिक विचारकों की तरफ हमने यह कार्य लक्षित किया है । कतर के अंदर और पूरी दुनियाके समुदायों के बीच इस कार्य के जरिए सेतुओं का निर्माण होगा एसा हम आशा करते हैं । आपको हम यह किताब देकर यह भी आशा करते हैं कि यह एक संकेत का काम करेगा और हमारे केन्द्र पर आनेके लिए प्रेरित करेगा ।

सुस्वागतम

इस अवसवरको हम उन लोगों को धन्यवाद ज्ञापन करने के लिए भी प्रयोग करना चाहते हैं जिन्होंने पोस्टरों , पुस्तिकाओं और पुस्तकों के रूपमें ‘ इस्लाम दर्शन ’ श्रृंखलाको तैयार करनेके लिए मेहनत किया है । सारे लेखकों , प्रूफ रीडरों , डिजाइनरों और निर्माणकर्ताओं ने सिर्फ एक ही उद्देश्य से मेहनत किया है , वो उद्देश्य है अपने मालिक अपने परमेश्वर को प्रसन्नता करना ।

मुहम्मद अली अल गमदी
डाइरेक्टर जनरल

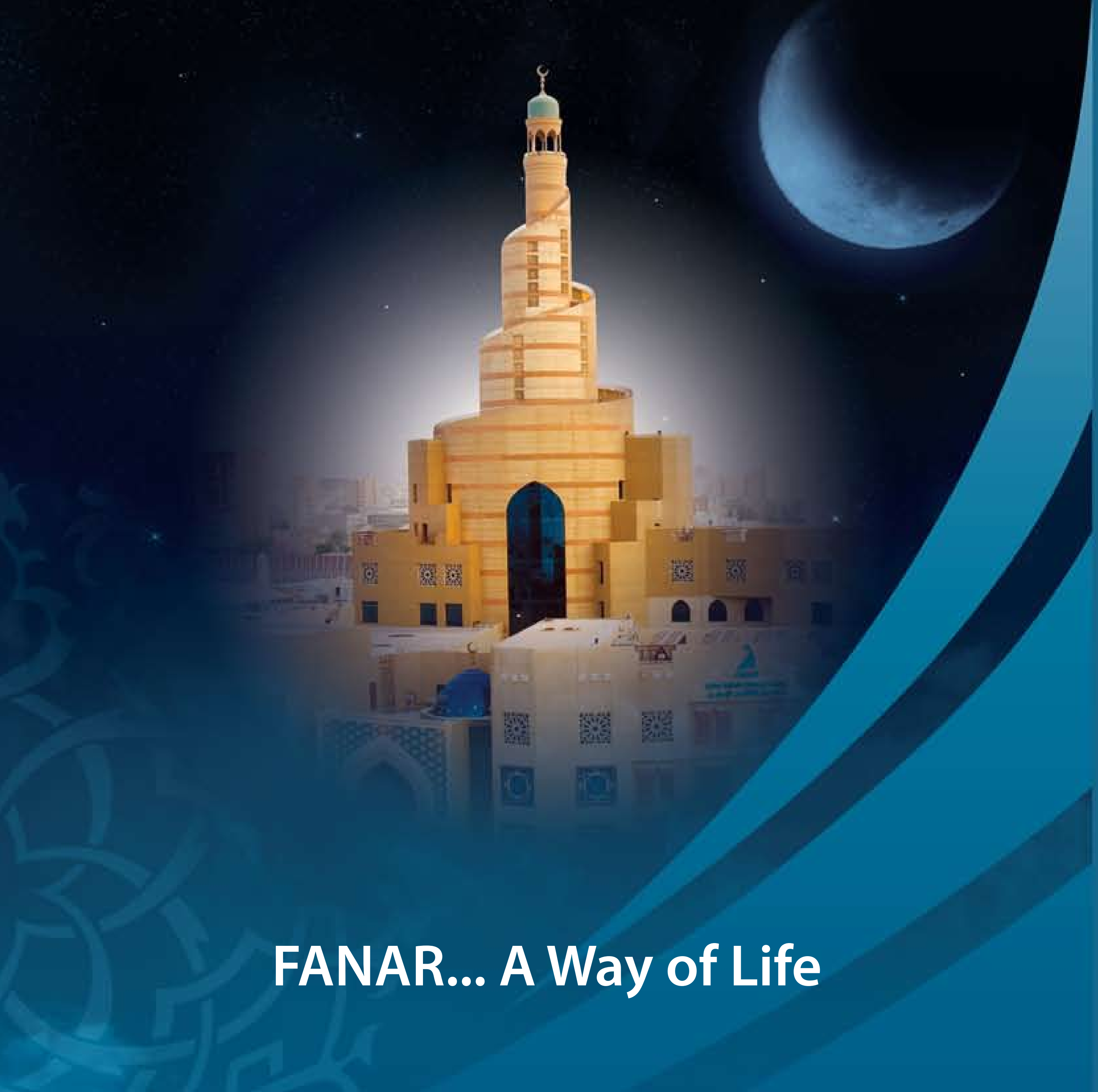

स्वागतम्   أهلاً وسهلاً

फ़नार, क़तर इस्लामी सक़ाफ़ती मरकज़ (सांस्कृतिक केन्द्र) एक लाभ - निरपेक्ष (बग़ैर लाभ के) काम करने वाली तंज़ीम (संस्था) है जो समाज को इस्लाम के बारे में ज्यादह से ज्यादह मालूमात पहुंचाने का कार्य करती हैं।

‘फ़नार’ क़तर की बोल चाल की भाषा का शब्द है इसका अर्थ है, एक तेज़ चमकीली रोशनी जो एक ऊंचे मीनार पर लगी हो और खुले समुदरों में मौजूद मल्लाहों को किनारे वापिस आने में मार्ग दर्शन करें। इस तरह की रचनाओं में सबसे पुरानी और मशहूर रचना एलेग्ज़ेंड्रिया का रोशनी का मीनार है जो २९७ और २८० ठब के बीच बनाया गया था। बहरी सफ़र (समुद्री यात्राऐं) जो क़तरी विरासत का एक हिस्सा है, के लिये रोशनी का मीनार सुरक्षित घर लौटने के लिये एक पक्का रास्ता है।

‘फ़नार’ ठीक वैसे रूपक अलंकार की तरह प्रयोग करते हुऐ ज़रूरत मंद दिमागों को कभी न ख़त्म होने वाला सुकून और आराम की क़यादत (मार्ग दर्शन) कर रहा हैं। ज़िन्दगी का एक मुकम्मल तरीक़ा।

फ़नार का तस्वुर (दूरदृष्टिता)

हमारा मक़सद एक ऐसा संसार बनाना है जो क़यामत तक क़यादत करे, आलमी सतह तक पहुंचना और इस्लाम, जिन्दगी गुज़ारने का काबिले अमल (व्यवहारिक) रास्ता है इस संदेश को समस्त मानव जाति तक पहुँचाने के लिये संघर्ष (जद्दो जेहद) करना हैं।

मक़सद (लक्ष्य)

- हम इस्लाम पर, जिन्दगी गुज़ारने के तरीक़े पर यक़ीन रखते हैं इसलिये अपने नज़रिये को पूरी मानव जाति तक पहुँचाने के लिये संघर्ष करते हैं।
- हम समुदायों और व्यक्तिगत (इनफ़रादी) तौर पर लोगों की ज़रूरतों और उनके विचारों के हिसाब से ख़िताब (संबोधित) करते हैं।
- जब हम लोगों को एक दूसरे की इज़्ज़त करने की सीख देते हैं तो हम एक दूसरे की मिली जुली मान्यताओं (क़दरों) तथा उच्च कोटि (अच्छे) नेक मापदण डों (मयारों) को उन तक पहुँचाने की पूरी कोशिश करते हैं।
- हमारा ईमान है कि हमारी कामयाबी की वजह हमारा इस्लाम में गहरा यक़ीन हैं।
- हम आलमी सतह पर उन लोगों तक पहुँचने को तैयार रहते है ओर उनसे बात करने को तैयार रहते है जिनका झुकाव अच्छे कामो और अच्छी नैतिकता की ओर होता है।

इस्लाम क्या है ?

एक अल्लाह में यक़ीन रखना ही इस्लाम है । वह (अल्लाह) बग़ैर किसी शक्ल व सूरत के एक उत्कृष्ट आस्तित्व है जिसको हम समझ सकते हैं।

अरबी भाषा में इस्लाम शब्द के अनेक अर्थ हैं । इस शब्द की उत्पत्ति 'सलाम' के मूल अक्षरों (सीन) (लाम) तथा (मीम) से हुई है। इन अक्षरों से इस्लाम शब्द के साहित्यक अर्थ का वर्णन है अर्थात आत्मनिवेदन, आत्म समर्पण शांति तथा सुरक्षा । सलाम अल्लाह की विशेषताओं में से एक हैं ।

एक मुसलमान ऐसी ''शख्सियत'' होती है जो खुद को अल्लाह की इबादत के लिये पेश करता है। इसलिये वह सब जो अल्लाह के 'एक' होने के मूल संदेश पर यक़ीन रखते हैं मुस्लमान बनाये गये । इनमें तमाम नबी, आदम, नूह, मूसा व ईसा से लेकर मोहम्मद तक शामिल हैं (अल्लह उन सबको बरकत तथा शांति दे)

इस्लाम मानव जाति के लिये रहम (करूणा) बनकर आया यह मार्गदर्शन की एक पुस्तक के रूप में आया जिसको अल्लाह का शब्द 'कुरान' कहते हैं । यह १४०० वर्ष पूर्व प्रकट हुआ और आज तक बग़ैर किसी तबदीली के मौजूद है । यह किताब आख़री नबी मोहम्मद की शिक्षाओं के साथ दर्शाती है कि सृष्टा के आदेशानुसार समस्त मानवता का जीवन के हर आयाम में चाहे भौतिक या आत्मिक हो, किस प्रकार का व्यवहार होना चाहियें ।

सृष्टि (रचना)

क्या हर एक इन्सान की यह प्रकृति नहीं है कि जब उसको ज़रूरत हो या वह बर्बाद हो गया तो वह आस्मान की तरफ़ देखता है ? जब नुक़सान में होता है तो अल्लाह से रोता है । जब निराश होता है तो अपनी आँखे उस उत्कृष्ट आस्तित्व की ओर उठाता है। यह समस्त मानव जाति का बहुत ही सहज़ व्यवहार (प्रकृति) है।

प्रत्येक मानव का एक कुदरती झुकाव इस ओर होता है कि वह जीवन के मक़सद के विषय में कुछ सवाल करे, हम क्या कर रहे हैं ? जीवन का उद्देश्य क्या है ? क्या कोई सृष्टा है या यह सब खुद ब खुद अनियमित संयोग से प्रकट हो गया है ? जब तक इन सवालों का जवाब नहीं मिलता तब तक इन्सान की आत्मा को शंति प्राप्त नाहीं होती है और जीवन बग़ैर किसी मतलब के एक बेकार मेहनत महसूस होता है।

कुरान इन्सानो को दुनिया की यात्रा की दावत देता है, कि वह स्वंय इस संसार को देखे और सोचे (विचार) कि जीवन की सृष्टी किस तरह शुरू हुई ?

‘‘कहो (ऐ मोहम्मद) की ज़मीन का सफ़र करो और देखो कि कैसे सृष्टी का प्रारंभ हुआ। तब अल्लाह अपनी अंतिम रचना की उत्पत्ति करेगा और (वह है विकास) । बेशक अल्लाह हर एक चीज़ पर क़ादिर (समक्ष) है’’ (कुरान २९, २०)

भूमण्डल की सृष्टि (रचना)

हमारे चारों और फैली हुई विशाल एंव अद्भुत सृष्टी पर विचार करने पर हर एक इन्सान अपने चारों तरफ़ की दुनिया के बारे में गहराई से सोच सकता है और इस नतीजे पर पहुँच सकता है कि इस शानदार कायनात को बनाने वाला कोई रूपकार कोई रचनाकार अवश्य है।

जब तुम पढ़ते हो, किसी समागार की ओर देखते हो, किसी इमारत को देखते हो तो उसके शिल्पकार के बारे में आश्चर्य करते हो । तुमने शायद सोचा हो कि व्यक्ति प्रत्येक शब्द के, रगों के चयन में कितना सावधान था, हर एक ईट का चयन और उसको इस प्रकार जमाया कि तुम्हारें (मेहमान) उपर अपना एक अस़र छोड़े ।

तुम्हारे बारे में क्या है पाठक ? तुम्हारी बनावट के बारे में क्या है ? तुम्हारे जटिल अंग, इस सुन्दर पोस्टर को देखते वक्त़ तुम्हारी आँखो की क्रिया, तुम्हारा हृदय जो इसके प्रत्येक शब्द को पढ़ते समय उत्तेजित होता है, मस्तिष्क जिसका तुम इस्तेमाल कर रहे हो जो किसी भी उपलब्ध मानव निर्मित कम्प्यूटर से अधिक तेज़ व अधिक ताक़त वर है, उन सबको किस ने बनाया है ?

इस धरती के विषय में क्या है जिस पर तुम खडे हो । जीवन विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान हर एक सिद्धान्त के विषय में क्या है, मूल शक्तियों जैसे गुरूत्वाकर्षण और विद्युतिय चुम्बकत्व से लेकर ।

अणुओं तथा तत्वों की रचना को बारीकी व कुशलता से एक साथ पिरोया तब जीवन संभव हुआ ।

अपने सौर मण्डल में स्थित पृथ्वी को देखो, पृथ्वी की अपनी परिक्रिमा यदि बिल्कुल सही न होती तो पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं होता । हमारा मौर मण्डल अनेक सौर मण्डलों में से एक है। हमारा तारामण्डल आकाश गंगा ब्रहमाण्ड के १०,००० लाख तारा मण्डलों में से एक है वे सब एक व्यवस्था में हैं । वेसब एक नियम के सहारे एक दूसरे से टकराये बग़ैर अपनी कक्षाओं में जो उनके लिय नियत हैं, में तैर रहे हैं । क्या मानव उनकी इस बारीकी को क़ायम रखे हुऐ है क्या मानव उनको गतिशील रखता है ? क्या यह सब कुछ सिर्फ़ एक इत्तेफाक़ से एक़ सृष्टा या रूपकार के बगैर केवल एक बड़े और तेज़ टकराव के नतीजे में वजूद में आ सका होगा ?

‘‘उनको लिजिय जिन्होंने यक़ीन नहीं किया और यह नहीं माना कि आकाश और धरती जो जुड़े हुऐ वजूद थे और हमने इनको अलहदा (पृथक) किया और पानी से हर एक ज़िन्दी चीज़ बनाई ? तब भी क्या वे यक़ीन नहीं लायेंगे ?’’ (कुरान २१,३०)

‘‘बेशक आकाश एंव धरती की सृष्टी तथा रात के बाद दिन तथा दिन के बाद रात के परिर्वतन में समझदारों के लिय निशान मौजूद हैं’’ (कुरान ३, १९०)

‘‘और उसने तुम्हारे लिये रात एंव दिन, सूर्य तथा चँद्रमा एंव तारे बनाये जो उसके आदेशों का पालन करते हैं बेशक इसमें समझदारों के लिय निशान हैं’’(कुरान १६, १२)

मानव जाति का सृष्टि

एक बार हम यह स्वीकार कर लें कि समस्त सृष्टि का बनाने वाला एक सृष्टा है तब हमको अपने वजूद का जवाब ढूढ़ना चाहिये। कुरान निम्नलिखित आयात में मनुष्य की रचना की व्याख्या करता है।

''ऐ इन्सानो अपने ईश्वर से डरो, जिसने तुम्हारी एक आत्मा (आदम) से उत्पत्ति और इसी आत्मा (आदम) से उसकी जोड़ी (हव्वा) को बनाया। और इन दोनो से समस्त स्त्री व पुरुषों को फैलाया। उस अल्लाह से डरो जिससे तुम मांगते हो और रिश्ता तोड़ने से डरो बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर निगहबान है'' (कुरान ४, १)

अगर आपको बग़ैर किसी वजह के तोहफ़े के बतौर एक किताब या एक पेय दिया जाये तो मैं यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि आप शुक्रिया कहने को मजबूर हो जायेंगें। बेशक रूपकार जो तुम को तुम्हारी आँखे, हृदय और फेफड़े दिये, उसका धन्यवाद आभार तथा प्रशंसा करनी चाहिये। अल्लाह हमको बताता है कि हम उसकी इबादत करें, उसकी आज्ञा मानें और उसका आभार व्यक्त करें यही जीवन का मकसद है;

''मैं ने जिन्नात और इन्सानो को महज़ इसलिय पैदा किया है कि वह सिर्फ़ मेरी इबादत करें'' (कुरान ५१, ५६)

हम जो कुछ भी करते हैं उसके लिय उसका आभारी होना चाहिये। हमको जो भोजन, प्यास बुझाने के लिये पानी और तन ढ़कने के लिय जो कपड़े उपलब्ध कराता है उसको धन्यवाद देना चाहिय। हर चीज़ में उसकी पहचान के निशान मौजूद हैं।

जब मनुष्य की सृष्टी की ज़िक्र आता है तो शुरु में ही यह बात साफ़ कर दी गयी कि अल्लाह ने मनुष्य की सृष्टी बेकार में नही कि उसने धरती पर ईश्वर का नायब पैदा कर दिया है। मनुष्य को दिव्य मार्गदर्शन के अनुसार समस्त जीवों के बीच इन्साफ के साथ ध रती पर शासन, खेती और उसकी देख भाल के कार्य सौंपे।

''और (कह दो ऐ मोहम्मद), और जब तेरे रब ने फ़रिश्तो से कहा कि मैं जमीन पर ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ......'' (कुरान २,३०)

मानव जाति की सृष्टि में कुछ और भी दिव्य विशेषताऐं जैसे रहम, क्षमाशीलता तथा दयालुता स्पष्ट हैं।

क्या मौत के बाद ज़िन्दगी है ?

मुसलमानों का विश्वास है कि जीवन एक अल्पकालिक (छोटे वक़्फे) की हालत है। यह भविष्य के न ख़त्म होने वाले जीवन की तैयारी मात्र है। धरती पर जीवन एक अंतिम चेतावनी नहीं है। मृत्यु अन्त नही केवल संसारों का परिवर्तन मात्र है। जीवन, भविष्य में दाखिल होने की सीढ़ी है। जिसके बाद जन्नत में हमेशा हमेशा ऐशो आराम या नर्क में यातनाऐं। अल्लाह क़यामत के रोज़ सब को जिन्दा करेगा। उस दिन वह मानव जाति जिसको अक़्ल की दौलत दी गयी, जिसको इच्छाहिशों के लिय आज़ादी दी गयी अपने कामों के लिय जवाबदह होगी। मानवजाति को चुनाव करने का हक़ दिया गया था कि वह दिव्य मार्गदर्शन कस अनुसरण करे और इस जीवन और इसके बाद के जीवन में न ख़त्म होने वाले इनामों की फ़सल काटे। मृत्यु के पश्चात के जीवन का यक़ीन इस्लाम में आस्था का एक स्तम्भ है।

''हर जिंदा चीज़ मौत का मज़ा चखेगी। और उस दिन जब मुर्दो को जिन्दा किया जायेगा (क़यामत के दिन) तुम को तुम्हारा पूरा मुआवज़ा दिया जायेगा। बस जिस ख़क्स को आग से हटा लिया जाये और जन्नत में दाखिल कर दिया जाये वह कामयाब हो गया। इस दुनिया की ज़िन्दगी तो केवल एक धोके का उपभोग है'' (कुरान ३, १८५)

अल्लाह का अकेला होना : (‘एक’ होना)

‘अल्लाह एक है’ में विश्वास ही इस्लाम की सही बुनियाद है अल्लाह ने जन्म नही लिया और न कभी उसकी मृत्यु होगी। इस का सीधा प्रतिवाद (तरदीद) यह है कि सब की सृष्टी करने वाले ने स्वंय की सृष्टि की हो। अल्लाह किसी चीज़ की शक्ल वाला नहीं है। कुरान के निम्नलिखित अध्यायों में अल्लाह का जो वर्णन किया गया है उसके अनुसार हमारा मस्तिष्क, दृष्टि तथा विचार इसकी कल्पना कर सकते है।

‘‘आप कह दीजिये कि वह अल्लाह एक ही है। अल्लाह बे नियाज़ है (न खत्म होने वाला आश्रय) न इससे कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ और न कोई इसके समकक्ष (हमसर) है’’ (कुरान ११३, १-४)

मनुष्य द्वारा बनायी गयी किसी चीज़ के आगे सर झुकाना या औंधे मुंह लेटना सूझबूझ का फैसला नहीं है। प्रारंभ में सबसे पहला गुनाह थाा अल्लाह के साथ किसी को शामिल करना, मूर्तीयाँ बना कर उनको पूजना और उन मूर्तीयों को अल्लाह कहना और यह कहना कि यह अल्लाह का बेटा या अल्लाह का बिचौलिया है।

‘‘यक़ीनन अल्लाह अपने साथ किसी को शरीक (शामिल) बताने वालें को माफ़ नही करता लेकिन इसके सिवा जिसे चाहे माफ़ कर देता है। और जिसने अल्लाह के साथ शरीक मुक़र्रर किया उसने यक़ीनन बहुत बड़ा गुनाह किया’’ (कुरान ४, ४८)

इस्लाम में यक़ीन (आस्था) का बुनियादी असूल यह है कि अल्लाह का कोई बेटा या बिचौलिया नहीं है। उसने नबीयों को केवल मार्गदर्शन के लिये भेजा और स्वंय नबी भी मनुष्य थे। धर्म में धर्माधिकारियों की ज़रूरत के वगैर अल्लाह सीधे अपनी इबादत का हुक्म देता है। अल्लाह के अलावा किसी अन्य की इबादत जैसे किसी पादरी या सन्त या उनसे सहायता मागने वाला इस्लाम से ख़ारिज (बाहर) है। इससे हट कर अल्लाह को मानने वाले और उसके अल्लाह के बीच इबादत और अनुनय विनय बहुत ही व्यक्तिगत वस्तु है।

‘‘और यह नहीं हो सकता कि वह तुम को फरिश्तों और नबीयों को रब (अल्लाह) बनाने का हुक्म करें। क्या वह तुम्हारें मुसलमान होने के बाद भी तुम्हें कुफ़र (नास्तिक बनने) का हुक्म देगा’’। (कुरान ३, ८०)

अल्लाह की ख़ूबियां (विशेषताऐं)

किसी के अपने हाथों द्वारा बनायी गयी चीज़ की पूजा (इबादत) या अपने ही जैसे मानव की पूजा आत्मा को शांति नहीं दे सकती है। फिर भी पूजा की जरूरत और श्रृद्ध का भाव हर एक इन्सान में कहीं गहरे तक है। इस्लाम में हम एक अल्लाह की इबादत को चुनते हैं। अल्लाह ने उसके विवके से अपने कुछ नामों तथा विशेषताओं की सूचना के लिये हमारा चयन किया ताकि हम उसको अच्छी तरह समझ सकें।

यहाँ उसकी कुछ खूबियों कि मिसालें (उदहारण) दिये जाते है; अल्लाह सब का बनाने वाला है, सब को जिसकी उसने सृष्टी की है का कायम रखने वाले है वह सब सुनता है सब देखता है तथा सब जानने वाला है। उसका वर्तमान, भूत तथा भविष्य का ज्ञान श्रेष्ठ है चाहे वह छुपा हो या न हो। वह निहायत रहीम, करीम और नेकी करने वाला है। वह खुद को कायम करने वाला व हमेशा रहने वाला है। उसको नींद की जरूर नहीं होती और न वह आराम करता है। उसका कोई साथी, बेटा, मां या बाप नहीं है। सारी इबादत सीधे उसी के लिये है। वह सुन्दरता को आकार देने वाला है,अच्छाई को बनाने वाला और वह रोशनी है और मार्गदर्शक है।

‘‘ वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह निहायत पाक, सब बुराइयों से। पाक साफ़ अमन देने वाला निगहबान, विश्वास में उच्च, खुद मुख्तार अल्लाह ऐसा बड़ाई वाला है पाक है अल्लाह उन चीजों से जिनको यह इसका शरीक बनाते हैं। वह अल्लाह है जो ख़ालिक है (सृष्टा), मोजिद (अविष्कारक) है और रूप देने वाला है, उसी के लिय निहायत अच्छे नाम हैं। हर चीज़ चाहे वह असामानों में हो या ज़मीन पर उसकी पाकी बयान (वर्णन) करती है। और वही गांलिब है हिकमत (बुद्धिमान) वाला है’’ (कुरान ५९, २३-२४)

अर - रज़्ज़ाक (पूर्तिकरने वाला)

‘‘आप कह दीजिये : कि आओ मैं तुम को वह चीजे़ पढ़कर सुनाऊँ जिनको तुम्हारे रब न तुम पर हराम फ़रमा दिया (वह हुक्म देता है) है वह यह कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठहराओं और मां बाप के साथ अहसान (अच्छा व्यवहार) करो और गरीबी के कारण अपनी सतांनो की हत्या मत करो हम तुम को और उनको रिज़्क़ देते हैं (पूर्ति करते है’’) (कुरान ६, १५१)

अल-ग़फ़ूर (माफ़ करनेवाला)

‘‘बेशक मैं उन्हें बख़्श देने (माफ़ करने) वाला हूँ जो तोबा करें, ईमान लायें नेक काम करें सीधे रास्ते पर रहे’’ (कुरान २०, ८२)

अल क़य्यूम (क़ायम रखनेवाला / संपोषणीय)

‘‘अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई माबूद (देवत्व) नही वह हमेशा ज़िन्दा रहनेवाला और निगहबान है’’ (कुरान ३,२)

पांच सुतून (स्तंभ)

जैसा कि एक इमारत की बनावट और पायेदारी (स्थिरता) के लिय स्तंभ ज़रूरी होते है उसी प्रकार प्रत्येक मुसलमान के लिये इस्लाम में पांच सुतून (स्तंभ) महत्वपूर्ण हैं ।यह स्तंभ मनुष्य के ईमान को मज़बूती देते हैं नियमित करते हैं और मुसलमानों को आपस में भाई चारे में बांधे रहते हैं । पहला स्तंभ आस्था की घोषण (एलान) (शहादा), दूसरा स्तंभ प्रार्थना (नमाज), तीसरा अनिवार्य दान (ज़कात) चौथा उपवास (रोज़ा या सोम) और पांचवा तीर्थ - यात्रा (हज)

आस्था (ईमान) की घोषण (शहादा)

यह यक़ीन (ईमान) का अति महत्वपूर्ण स्तंभ है घोषण करता है; ‘‘आल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नही है और मोहम्मद उसके अंतिम पैग़म्बर (नबी) है’’

यह तुम्हारे और अल्लाह के बीच एक क़रार (सहमति) है जो इस बात की पुष्टि करता है कि तुम ‘एक’ अल्लाह पर यक़ीन पर ईमान लाये हो और यह भी यक़ीन हो कि मोहम्मद उसके आख़री नबी है। इसके नतीजे में तुम मुस्लिम समाज का एक अंग बन जाते हो जो तुम को ज़िन्दगी के मक़सद और लक्ष्यों को प्राप्त करने में मददगार होता है।

प्रार्थना (नमाज़)

मुसलमान और अल्लाह के दरम्यान रिश्ता बहुत महत्वपूर्ण है और बग़ैर किसी बिचौलिय के सरधे उसकी प्रार्थना इन रिश्तों को और गहरा बना देती है । हमको एक दिन में पांच वक्त नमाज़ पढ़ने का हुक्म है जो हमको अल्लाह से क़रीब करने में मदत देती है हमको अच्छे रास्ते पर चलाती है और हमारे गुनाहों को धो डालती है।

‘‘और प्रार्थना (नमाज़) क़ायम करो और दान (ज़कात) दो । और जो कुछ भलाई (अच्छाई) तुम अपने लिये आगे भेजोगे, सब कुछ अल्लाह के पास पाओगे । बेशक अल्लाह तुम्हारे कामो को देख रहा है’’ (कुरान २, ११०)

फ़र्ज ज़कात (अनिवार्य दान)

अल्लाह फ़रमाता है कि जब तुम अपना जायज़ा ले चुको तो उनकी तरफ़ भी देखो जो तुम से कम भाग्यशाली हैं। शब्द ज़कात के अर्थ पाकी (पवित्रता) तथा बढ़ता हैं। एक ईमान वाला दूसरे की मदद के लिये अपनी पूंजी का एक भाग उस कम भाग्यशाली को साल में एक बार सौंपंता है। इस ज़कात का मूल्यांकन उसकी पूंजी से २.५: के दर से होता है। यह मुसाफ़िरों, यतीमों (आनाथों) एंव निर्धनो को दिया जाता है। यह दूसरे दानों से भिन्न है क्योंकि यह वैकल्पिक नहीं है। इस्लाम में मान्यता है कि सब धन समपत्ति अल्लाह की अमानत है। इसको समाज की भलाई के लिय प्रयोग करना चाहिये।

''उन्हें इसके सिवा कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें। इसी के लिये दीन (धर्म) को सच्चा रखे इब्राहीम हनीफ़ के दीन और नमाज़ को क़ायम रखें ज़कात देते रहें। यही दीन सच्चा और मज़बूत है'' (कुरान ९८,५)

उपवास (रोज़ा)

प्रत्येक वर्ष रमज़ान के महीने (चन्द्र वर्ष का नवांमहीना) में सब मुसलमान प्रातः से सूर्य के अस्त (डूबने) तक उपवास करते हैं। इसमें वे भोजन, जल एंव वैवाहिक संबंधो के प्रयोग से संयम बरतते हैं और यह सब अल्लाह की भलाई हासिल करने के लिय अच्छे मक़सद से किया जाता है।

''रमज़ान का महीना (वह है) जिसमें कुरान उतारा गया जो लोगों को हिदायत (मार्गदर्शन) करने वाला है और जिसमें हिदायत की और हक़ और नाहक़ की तमीज़ (पहचान) की निशनियां है। तुम में से जो भी इस महीने (का नया चांद देखकर) को पाये उसे रोज़ा रखना चाहिये और जो बीमार हो या मुसाफ़िर हो उसे दूसरे दिनों में यह गिनती पूरी करनी चाहिये। अल्लाह का इरादा तुम्हारे लिये आसानीयां पैदा करने का है सख्ती का नहीं। वह चाहता है कि तुम गिनती (उपवास) पूरी कर लो और अल्लाह का शुक्र अदा करो (जिसके लिय) उसने तुमको हिदायत दी। (कुरान २, १८५)

अल्लाह अपनी ख़ुशी के लिये हमको रोज़े का हुक्म देता है और हम ऐसा अपनी आध्यत्मिकता का स्तर बढ़ाने के लिय तथा अल्लाह के निकट आने के लिय करते हैं। अल्लाह की हिदायतों के नतीजें में हम अपनी रोजमरी (दिनचर्या) की आदतों को बदलते हैं और हम सीखते हैं कि हम अपनी आदतों के गुलाम नही हैं।

बल्कि अल्लाह के गुलाम हैं। अपने आपको अपनी मर्जी से दुनिया की सुख सुविधाओं से एक छोटे समय के लिये अलग करके एक रोज़ेदार अपनी हमदर्दीयां उन लोगो के लिये क़ायम करता है जिनको लगातार भोजन और पानी बग़ैर गुज़ारा करना पड़ता है।

हज (तीर्थ यात्रा)

यदि एक मुसलमान समर्थ है, स्वस्थ है उसके ऊपर क़र्ज का बोझ नहीं है तो अल्लाह ने उसको जीवन में एक बार मक्का की तार्थयात्रा को अनिवार्य किया है। हज की औपचारिकताऐं नबी इब्राहीम के समय से शुरू हुई थीं और मक्का में उन्होंने और उनके परिवार ने जो सकंट सहे थे, उनका भी स्मरण कराती हैं। हज, काबा की यात्रा भी है जो अल्लाह का प्रतीकात्मक घर है जिसको मूलतः नबी आदम ने बनाया था।

हज उक वक्त् है जब सारे विश्व से अलग अलग जगहों भाषाओं, वर्णो के लोग एक विश्वव्यापी बंधुत्व की भावना से एक अल्लाह की इबादत के लिये जमा होते हैं। आदमी केवल सफ़ेद कपड़े के दो टुकड़ो से तन ढ़कता है जो इनके बीच की ख़ासीयत, तबक़े के फ़र्क के एहसास को मिटा देते हैं। अमीर, गरीब, काले गोरे एक दूसरे के करीब मिलकर खड़े होते है। अल्लाह की नज़रो में बराबर सिवाय उनके अपने आमालो (कार्यों) के।

हज एंव ईद-अल-अज़्हा जैसे पावन उत्सव की खुशी मनाना अल्लाह की इबादत है और जरूरत मंद लोगो को याद करने का पर्व है। कुर्बानी (बलि) का गोश्त जरूरत मंद लोगों में बांटा जाता है और एक ज़ायद (अतिरिक्त) नमाज़ का एहत माम (पढ़ी जाती है) होता हैं।

''हज (जब चल रहा हो) का महीना एक प्रसिद्ध महीना है तो जिस किसी ने हज को अपने उपर फ़र्ज किया (अहराम पहना) तो फिर (उसके लिये) अपनी बीवी से लैंगि संबंध, गुनाह करने लड़ाई झगड़ा करने से बचना है, तुम जो नेकी करोगे अल्लाह को उस नेकी की ख़बर है। और अपने साथ सफ़र खर्च ले लिया करो और सबसे बेहतर तो अल्लाह का डर है तो अल्लाह कहता है ऐ इक़्लमदों मुझसे डरते रहा करो'' (कुरान २,१९७)

पैगमबरों (संदेशवाहकों) के वंशवृक्ष

पैग़म्बरों के भेजने का मक़सद (उद्देश्य)

क्या यह ठीक है कि किसी चीज़ को बनाया जाये और उसको बग़ैर किसी कानून और नियमंण के काम करने की इजाज़त दी जाये और फिर उसको बुला कर नियम तोड़ने की सज़ा दी जाये ?

स्वतंत्र इच्छाओं तथा सूझ बूझ की ताक़त के साथ मनुष्य की रचना करने के बाद अल्लाह ने अपनी अपार बुद्धिमता से यह फैसला किया कि इस मानव जाति के मार्गदर्शन (हिदायत) के लिये देवदूतो और संदेशवाहकों (पैग्म्बरो, नबीयों) को भेजा जाये। हर एक नबी को उसके खास लोगों के बीच भेजा गया था जो उनको एक अल्लाह की इबादत की जरूरत और उसके साथ किसी दूसरे को शरीक करने की आदत से दूर रखने की याद दहानी (स्मरण) कराते रहें। यह देवदूत खुदा, उसके बेटे या उसके साथी नहीं थे बल्कि सिर्फ़ मानवजाति के अच्छे मानव थे जो अपनी दीनता, नैतिकता शांतिमयता और अल्लाह, की जानकारी के कारण चुने गये।

अल्लाह ने मानव जाति के पहले दिन से ही नबीयों की एक लम्बी श्रखंला (जंजीर) भेजी। नबी आदम (मानव जाति के दादा) से लेकर अंतिम नबी मोहम्मद तक (उन पर अमन रहे) इस लम्बी ज़ंजीर में इस्राईल की संतानो के नबी और पांच महान पैम्मबर शामिल हैं जो बहुत ही अहम (महत्वपूर्ण) हिदायतों के साथ आये। नूह, इब्राहीम मूसा, ईसा और मोहम्मद (अल्लाह इन पर अपनी बरकतें और अमान सादर करें)

नबी, मानवता के लीडर थे जो एक अल्लाह की इबादत का सबक़ (पाठ) जानते थे। उनको अच्छी नैतिकताओं तथा मानवधिकारों (इन्सानी हुकूक़) की जानकारी थी। उन्होंने अपने लोगों को एक साथ रहने की हिदायत की। कुरान कहता है कि हर एक पैग़म्बर ने अपने लोगों से कहा;

''ऐ मेरे लोगों ! अल्लाह की इबादत करो , अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई माबूद (देवत्व) नही है'' (कुरान ७, ५९) ''अल्लाह ताला इन्साफ़ का, भलाई का और रिश्तेदारों के साथ अच्छे व्यवहार का हुक्म देता है और बेहयाई के कामों, नाशायस्ता और जुल्म व ज़्यादती से रोकता है वह खुद तुम को नसीहते दे रहा है कि तुम नसीहत हासिल करो'' (कुरान १६, ९०)

इन नबीयों में मोहम्मद अंतिम पैग़म्बर थे जो सम्पूर्ण मानवजाति के लिय 'वही' (प्रकटीकरण) के पहले दिन से लेकर हमारे वजूद (आस्तित्व) के अंतिम दिवस तक के लिये अल्लाह का संदेश लाये। इसी कारण हम देखते हैं कि समस्त विश्व के मुसलमान चाहे वह किसी भी वर्ण और जाति के हों समस्त अल्लाह के नबीयों को स्वीकार करते हैं और उनका आदर करते हैं, क्योंकि वे सब ही एक अल्लाह की इबादत के रास्ते पर थे।

नबी
नूह
मानवता के दूसरे पितामह

इस्लाम, ईसाईयों तथा यहूदियों की धार्मिक पवित्र पुस्तकों में नबी नूह तथा बड़ी बाढ़ का वर्णन एक समान मिलता है कुरान कहता है कि वे एक पैग्म्बर थे जो ९५० वर्ष जिन्दा रहे। उन्होंने निस्वार्थ भाव से अपना जीवन लोगों में 'अल्लाह एक है' के विश्वास के उपदेश देने में लगा दिया। उनके उपदेशों में था कि मूर्तियाँ और प्रतिमाओं की इबादत मत करो, कमज़ोर और मजबूर लोगों पर रहम करो। उन्होंने लोगों को ईश्वर की ताकत तथा दया के निशान दिखाये और क़यामत के दिन के महत्वपूर्ण दण्ड की चेतावनी भी दी। लेकिन वे लोग इतने ज़िद्दी थे कि उन्होंने इस चेतावनी को अनसुनी की। अल्लाह ने उनको बाढ़ की शक्ल में महाप्रलय की सज़ा दी और सिर्फ ईमान वालों, जो नबी के बताये हुऐ रास्ते पर चलते थे उन की हिफाज़त की।

कुरान में नबी नूह के विषय में एक अध्याय है। कुरान के लम्बे अध्यायों (बाबों) में से एक बाब में इनकी कथा विस्तार से बयान की गयी है तथा उसमें निम्नलिखित बिन्दुओं को शामिल किया गया है:

- उसने उनको अल्लाह की सेवा और अल्लाह के लिये अपने कर्तव्यों के लिये कहा, कि शायद अल्लाह उनको माफ़ कर दे।
- उसने उनको रात दिन समझाया पर वे अपने कानो में ऊंगलिया ठूंसे रहे और इन्कार पर अड़े रहे।
- उसने उनसे हमेशा माफ कर देने वाले अल्लाह से माफी मागने को कहा जो उनकी धन और पुत्रों से सहायता करता है और उनकों बाग़ात, नदियां और अच्छी ज़िन्दगी देगा।
- अल्लाह क़ादर मुतलक़ (सर्व शक्तिमान) ने नूह को बातया, इनमें से कोई भी ईमान नहीं लायेगा सिवाय उनके जो पहले ईमान ला चुके है, तो हमारी देखरेख में (आंख के सामने) हमारी हिदायत में जलयान तैयार करो। जब उनके लोग पास से गुज़रते तो उनका मज़ाक़ उड़ाते।
- जब वह जलयान तैयार कर चुके तो अल्लाह ने हुक्मदिया कि इसमें हर प्रकार के जीवों के जोड़े या दो जीव (नर तथा मादा) को चढ़ा लो, अपनी गृहस्ती का सामान और वह लोग जो ईमान वाले हैं इस पर सवार करा लो।
- और यह हुक्म हुआ, ओ जमीन ! अपने पानीयों (जल) को निगल ले और ऐ अस्मान ! अपने बादलों को खत्म कर दें। और जल ने ज़मीन में समाना शुरू कर दिया और हुक्म की तामील हुई। वैसे ही जलयान नूह और ईमान वालों के साथ अल - जूडी नाम के पहाड़ पर आ टिका और मानवता को नयी शुरूआत का एक और अवसर प्राप्त हुआ।

नबी
इब्राहीम
पैगम्बरों के पिता

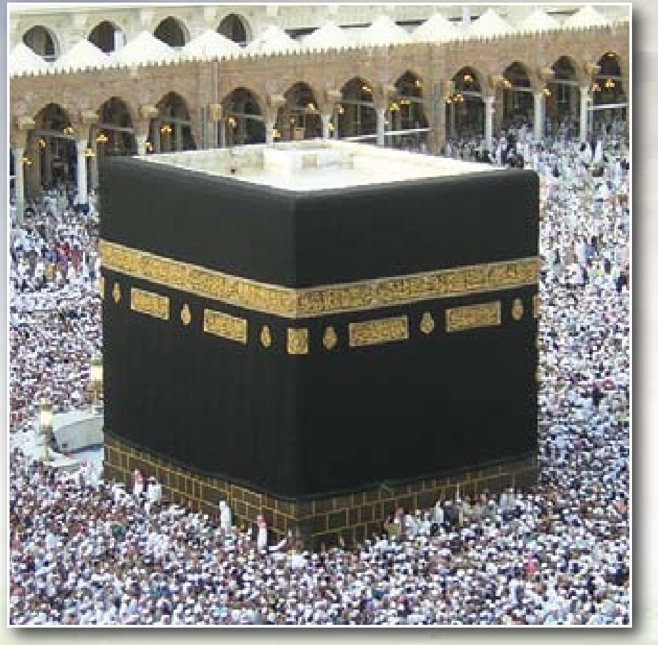

धर्म, नैतिकता (अख्लाक़), सामाजिक जीवन और पितृत्व के इतिहास में नबी इब्राहीम बहुत ही प्रतियाशाली व्यक्तियों में से एक थे। वह वास्तव में नबीयों के पिता हैं क्योंकि अल्लाह क़ादर मुतलक़ (सर्व शक्तिमान) ने आप की संतानों में से बहुत से नबी बनाये जैसे इसहाक, याक़ूब, दाऊद और उनके बेटों को। और इसके साथ ही आखिरी पैग्म्बर मोहम्मद के पूर्वज इस्माईल को। (इन सब पर अल्लाह की बरकतें ओर अमन रहे)

कुरान में इब्राहीम के विषय में तफ़सीली बाब (अध्याय) है। उनके गौरवपूर्ण कार्यो तथा जीवनी का ज़िक्र कुरान में विभिन्न जगहों पर मौजूद है। ख़ालिक़ (सृष्टीकरता) के एकाकी (एक) होने की सोच इब्राहीम के दिल में बचपन से ही थी। वह अपने वक़्त के मठवासियों के साथ गंभीर वाद विवाद (बहस) में हिस्सा लेते और उनकी मूर्ति पूजा, सितारों तथा अग्नि पूजा के रूजहान (प्रवृत्ति) को गलत साबित करते।

वह एक नबी, एक आदर्श पिता और एक आदर्श पुत्र थे। यहां उनकी जिन्दगी की कुछ झालकियां पेश हैं जो कुरान में बयान की गयीं हैं ?

- इब्राहीम एक ग़ैर - ईमान वाले पिता के फ़रमाबरदार (अज्ञाकारी) पुत्र थे। वह बहुत रहम दिल तथा बहुत सहनशील थे। (कुरान १९, ४२ - ४७)
- अल्लाह ने उनको पृथ्वी और आसमानो की बादशाहत दिखायी ताकि वह कामिल (पूरा) यक़ीन रखने वालों में से हो जायें। (कुरान ६, ७५)
- उन्होंने अपने लोगों से आसमान में मौजूद चांद, सितारों, सूरज जैसे ख़ुदाओं पर बहस की और ऐलान किया कि इनकी इबादत नहीं कर सकते क्योंकि वे इस लायक नहीं है (कुरान ६, ७६, ७९)
- अल्लाह जो सर्व शक्तिमान है, ने इब्राहीम का ज़िक्र एक चुने हुऐ व्यक्ति के यप में किया है ''और किताब में लिखा है (उनका क़िस्सा) यानी इब्राहीम का। बेशक वह सच्चाई के अलमरदार (प्रतीक) और नबी (सही) थे'' (कुरान १९, ४१)
- अल्लाह ने उनको अक्लमंदी अता की थी और दूसरों को मुत्तासिर (प्रभावित) करने की क़ाबलियत प्रदान की थी। '' और वह हमारा (फ़ैसलाकुन) तर्क था जो हमने इब्राहीम के लोगों के खिलाफ़ दिया। हम जिसको चाहते है मर्तबों में बढ़ा देते है। बेशक आप का रब बड़ा हिकमत (बुद्धिमान) और बड़ा इल्म (ज्ञान) रखने वाला है'' (कुरान ६, ८३)

नबी

मूसा

(कलीमुल्लाह)

नबी मूसा एक ऊंचे (बड़े) नबी थे और एक लीडर थे जिन्होंने इस्राईल की संतानो को फराऊन के दमन से आज़ाद कराया। यह न सिर्फ यहूदीयों तथा ईसाईयों बल्कि इस्लाम में इस का ज़िक्र मिलता है। इसकी इत्तेला (सूचना) तोरते व इंजील (नये व पुराने ओहद नामो) में तथा कुरान में मिलती है। नबीयों में सब ज्यादह नबी मूसा का ज़िक्र आता है। कुरान में ३४ बाबों (अध्यायों में १३६ बार इनका ज़िक्र है। नबी मोहम्मद के तसदीक़ मौजूद है।

मूसा का जन्म, इनका मिस्त्र के राजा फराऊन के महल में प्रवेश मदियान का सफ़र, नबी चुना जाना, फ़राऊन से इस्राईल की संतानों को बचाने के लिये जाना, फ़राऊन से जंग और इस्राईल की संतानो की मिस्त्र से हिजरत (कूच या निकलना), देवीय हिदायतों का सिनाई पर्वत पर प्रकट होना, रेगिस्तान की घटनाऐं और उनकी इस्राईल की संतानों के लिये रहनुमाई यह सब कुरान में बयान की गयी है।

कुरान में ज़िक्र है कि मूसा को तमाम दूसरे लोगों से ऊपर अल्लाह ने एक खास लक्ष्य के लिये चुना था। शब्द जो अल्लाह ने उन से कहे (कुरान १, १४३), यह सच्चाई (तथ्य) कि उनको अल्लाह की तरफ़ की ख़ास मुहब्बत और मक़बूलियत उन पर डाल दी गयी ताकि उनकी परवरिश अल्लाह की आखों के सामने की जायें (कुरान २०, ३१); सब इस बात का इशारा करते हैं कि मूसा को अल्लाह ने ख़ास अपनी ज़ात के लिये तैयार किया (कुरान २०, ४१)

कुरान में मूसा का ज़िक्र एक ऐसे नबी के रूप में है जो मोहम्मद (नबी) के आने की खुशखबरी देता है। वह हम को एक अनपढ़ नबी के आने के बारे में बताते है जिनका ज़िक्र तोरते और इंजील में मौजूद है। (कुरान ७, १५७)

इस्लामी रवायात (हदीसों) में मूसा को (कलीमुल्लाह) कहा जाता है (जिससे अल्लाह ने बातें की) क्योंकि अल्लाह ने सीधे मूसा से बात की और अपनी आयतों (पक्तियों) को उन पर नाज़िल किया (प्रकटीकरण)।

नबी

ईसा

एक महान पैग़म्बर

नबी ईसा इस्लाम के एक ऐसे नबी हैं जिनको इस्राईल की सन्तानों (बनी इस्राईल) की हिदायत (मार्गदर्शन) के लिये एक नयी धार्मिक पुस्तक इंजील के साथ भेजा गया था। कुरान बयान करता है कि मरियम ने ईसा को बगैर किसी पुरूष के छुऐ ही जन्म दिया था। यह एक मोजजाती (चम्तकारिक) वाक्य है जो अल्लाह के हुक्म से हुआ। ‘‘(ऐ मोहम्मद) इस किताब में मरियम का वाक्य भी बयान कर। जबकि वह अपने घर के लोगों से अलग होकर पूरब में एक जगह आयीं और उन लोगों की तरफ़ से परदा कर लिया। फिर हमने अपने फ़रिश्ते (जिब्राईल) को उनके पास भेजा और वह उनके सामने पूरा आदमी बन कर ज़ाहिर हुआ। उसने कहा मैं उल्लाह का भेजा हुआ कासिद (संदेशवाहक) हूँ और तुम्हारे लिये एक पाकीज़ा पुत्र देने का संदेश लाया हूँ। मरियम कहने लगीं भला मेरे बच्चा कैसे हो सकता है मुझे तो किसी इन्सान का हाथ तक नही लगा और न मैं बदकार (भ्रष्ट) हूँ। जिब्राईल ने कहा बात तो यही है लेकिन तेरे अल्लाह का कहना है कि यह उसके लिय बहुत आसान है। हम तो इसे लोगों के लिय अपनी खास रहमत से एक निशान बना देंगे। यह तो एक तै शुदा (पहले से आदेशित) बात है’’ (कुरान १९, १६-२१)

उनके लक्ष्य में मदद के लिये ईसा को अल्लाह की इजाज़त से मोजज़े (चमत्कार) करने की योग्यता दी गयी थी। इस्लामी मूल-पाठो (किताबों)के अनुसार ईसा न तो मृत्यु को प्राप्त हुऐ और न ही उन को सूली (शूली) पर चढ़ाया गया। इस्लामी रवायात (धर्म ग्रन्थों/हदीसों) के अनुसार वह क़यामत के दिन के करीब इंसाफ और ईसाई विरोधियों को हराने के लिए पृथ्वी पर लौटेंगे।

इस्लाम में दूसरे पैग़म्बरों की तरह ईसा को मुसलमान माना गया है जैसा कि उन्होने लोगों को अल्लाह की मर्जी पर चलने का सीधा रास्ता दिखाया (उपदेश दिया)। इस्लाम ईसा को ईश्वर या ईश्वर का बेटा नहीं मानता है। बल्कि कहता है कि ईसा एक आम (समान्य) मनुष्य थे जो दुसरे नबीयों की तरह अल्लाह की हिदायतें (संदेश) लोगों तक पहुँचाने के लिये दिव्य शक्ती द्वारा चयनित किये गये।

इस्लामी मूल -पाठ ईश्वर (अल्लाह) के साथ किसी को शरीक करने को मना करती है और अल्लाह की एक ईलाहीयत पर जोर देती है। कुरान में ईसा के अनेकों लक़ब (पदवियां) दी गयी हैं जैसे अल-मसीहा लेकिन इसका उस मायनों (अर्थ) के अनुकूल नही जिसमें ईसाई आस्था के अनुसार उनको अल्लाह का दास और मरियम का बेटा कहा गया है। इस्लाम में ईसा को मोहमम्द से पहले आने वाला नबी कहा जाता है और मुसलमानों का ऐसा विश्वास है कि यह मुसलमानों को मोहम्मद के आने की भविष्यवाणी (पेशीनगोई) थी।

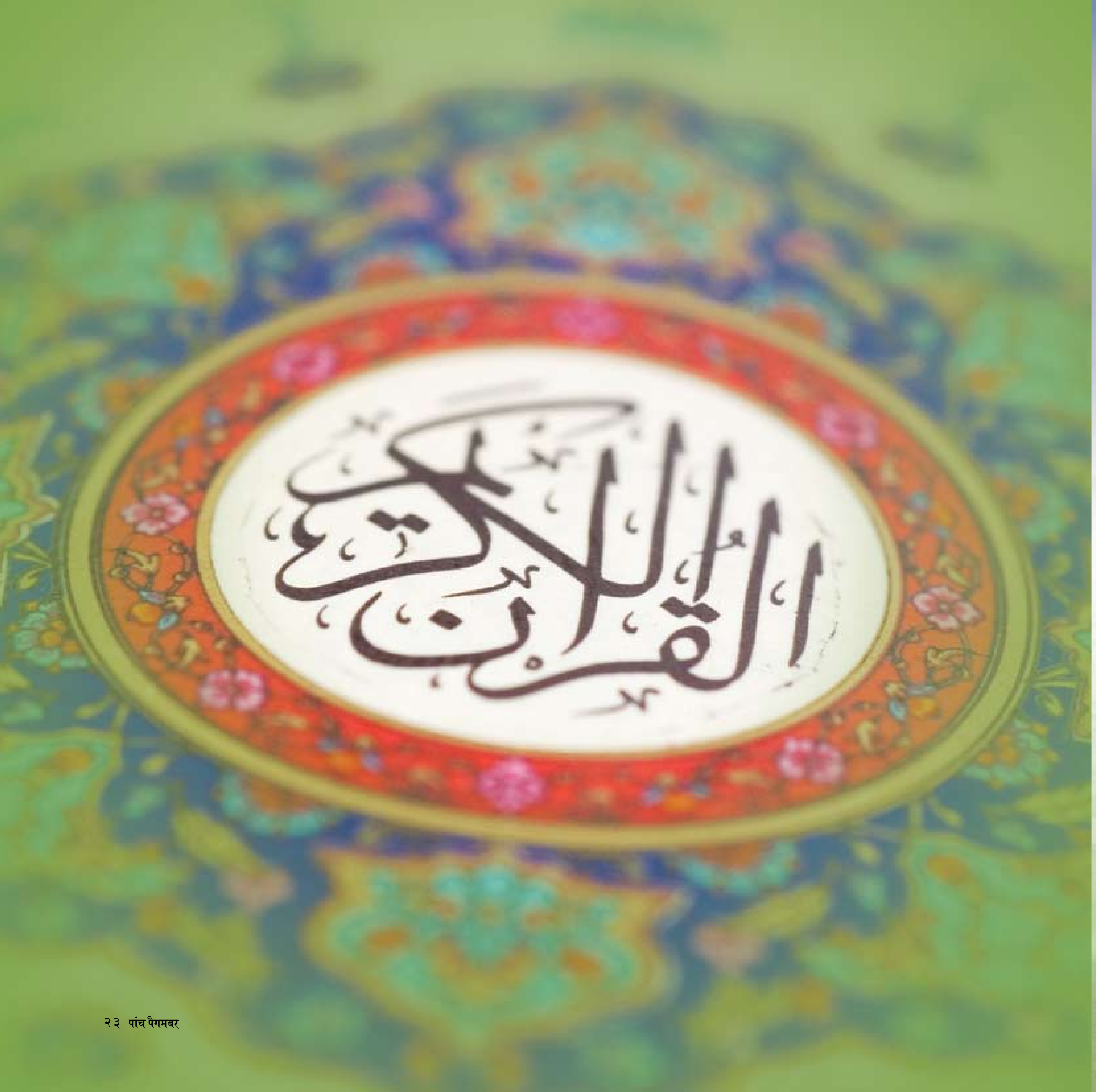

नबी

मोहम्मद

पैग़म्बरों पर मुहरबंद

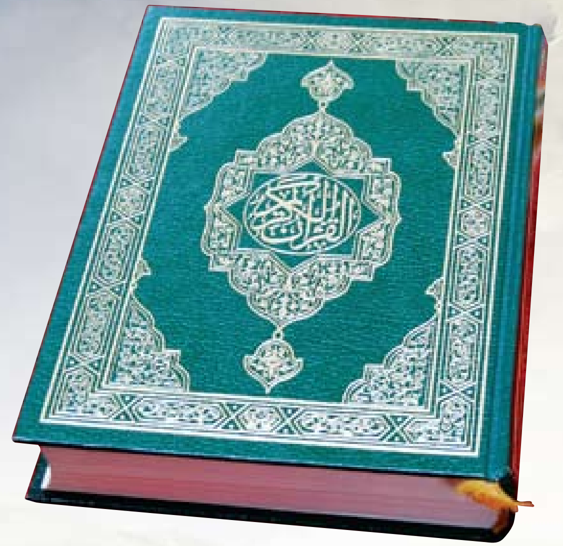

इस्लाम के पैंग़म्बर मोहम्मद मक्का में वर्ष ५७०CE में पैदा हुऐ थे। उनकी एक यतीम की तरह उनके चाचा ने परवरिश की जो एक मो. अज़िज़ (आदरण ीय)कुरैश कबीले से संबंध रखते थे। जैसे जैसे वह बड़े हुऐ अपनी सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, उदारता के लिए मशहुर हुऐ। यहां तक कि लोग उनको 'ईमानदार' के नाम से पुकारने लगे। मोहम्मद निहायत पाक इंसान थे उन्होने लम्बे समय तक अपने समाज मे मुर्तिपूजा जैसे घृणित कार्य तथा समाज की गिरावट का बक्त देखा। मोहम्द ने अपनी ४० वर्ष की आयु में अल्लाह से जिब्राईल के द्वारा पहला देवीयज्ञान (वही) प्राप्त किया। अल्लाह के शब्दों का नुजूल (प्रकटीकरण) २३ वर्षे तक और इस का मजमूई (संकलित) रूप कुरान कहलाता है। जैसे ही उन्होने कुरान को ज़बानी सुनाना शुरू किया और लोगों को अल्लाह द्वारा उतारे गये सत्य की हिदायत (उपदेश) देना शुरू की वह और उनके मानने वालों के छोटे समूह पर उनके चारों तरफ मौजूद समाज ने मुसीबतें ढ़हाना शुरू कर दिया। यह मुसीबतें इतनी सख्त और ज्यादह होती गयीं कि वर्ष ६२२CE में अल्लाह ने उनको मदीना चले जाने (हिजरत) की हिदायत दी।

कई वर्ष बाद मोहम्मद और उनके हामी (अनुयायी) मक्का लौटे जहां उन्होने अपने उन दुश्मनों को माफ़ कर दिया जो उनको बेरहमी से सताते थे। उनकी मृत्यू से पूर्व ६३ वर्ष की आयु तक अरब प्रायद्वीप का एक बड़ा हिस्सा मुसलमान हो चुका था। और उनकी मृत्यू के मात्र एक शताब्दी में इस्लाम का विस्तार स्पेन, पशिचम और सुदूर पूर्व चीन तक हो गया। इस्लाम के सिद्धान्तों की सच्चाई और पाकी इसके पुरअमन (शांतिमय) और तेज़ (तीव्र) विस्तार के मुख्य कारण हैं।

नबी मोहम्मद एक ईमानदार, इंसाफ़ पसंद, रहमदिल,हसास (संवेदनशील), सच्चे और बहादुर इंसान की एक मुकम्मल (संपूर्ण) मिसाल (उदाहरण) थे। हालांकि वह एक इंसान थे लेकिन उनको शैतानी बदकारीयों से दूर रखा गया था उन्होने केवल अल्लाह की भलाई और आख़रत में अपने फ़ायदे के लिये काम किया। इसके अलावा अपने कामों और सुलूक (व्यवहार) में वह हमेशा सर्तक सावधान थे और अल्लाह से डरते थे।

''ऐ लोगों'' तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से हक (सत्य) लेकर तुम्हारा रसूल (पैंग़म्बर) आ गया है। इसलिये तुम ईमान लाओ ताकि तुम्हारे लिये बेहतरी हो और अगर तुम काफ़िर हो गये तो बेशक अल्लाह का वह सब कुछ जो आसमानों और जमीन में है और अल्लाह हिकमत वाला व अकलमंद है।''(कुरान ४,१७०)

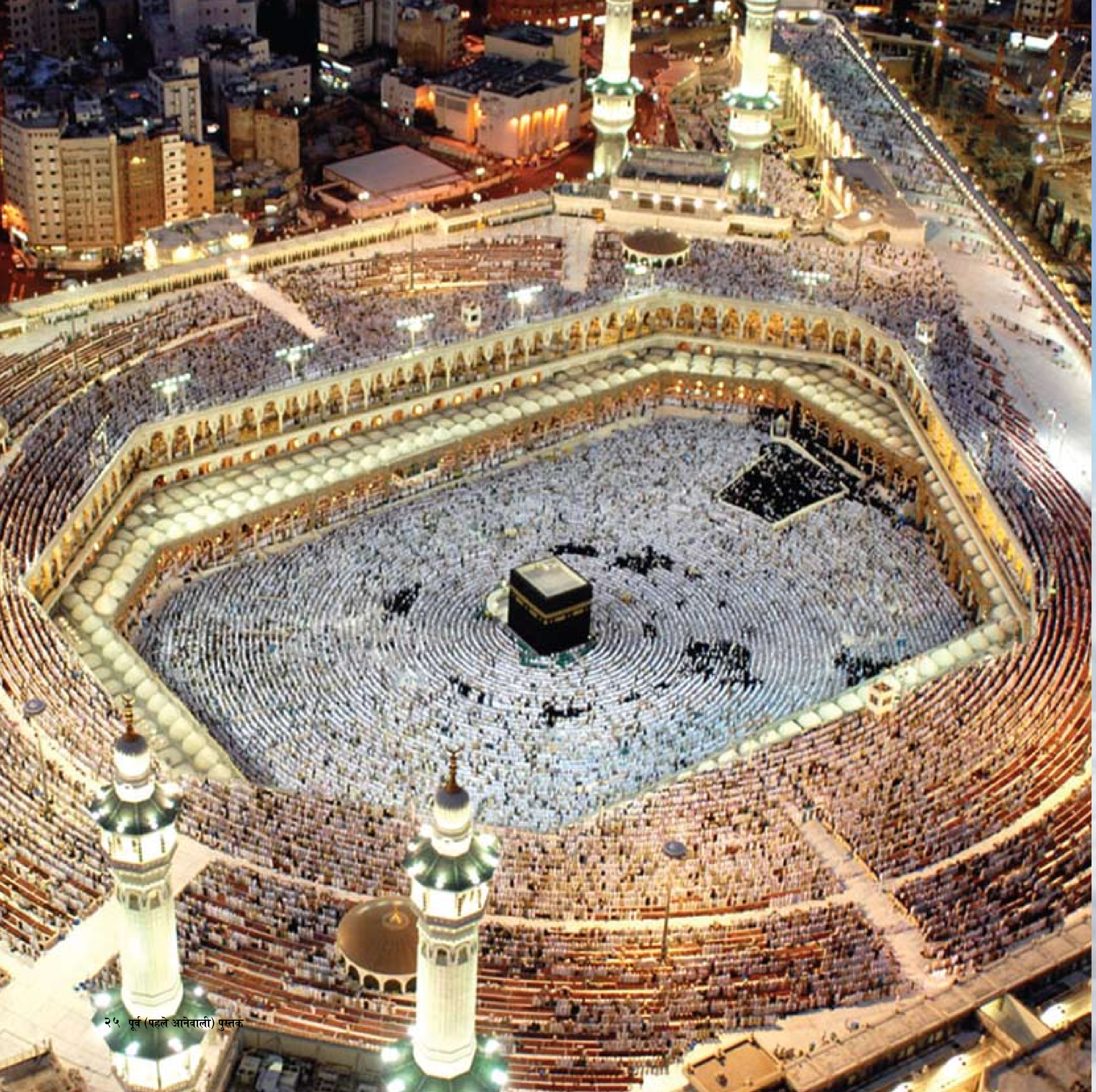

पूर्व (पहले आनेवाली) पुस्तक

हर समय अल्लाह ने मानव जाति (इंसानो) की हिदायत (मार्गदर्शन)के लिये नबीयों को भेजा कि वह इंसानो को सिर्फ उसकी (अल्लाह) की इबादत की हिदायत दें। शुरू से आखिर तक नबी आदम से लेकर नबी मोहम्मद तक संदेश एक ही था। पाँच मुख्य नबीयों को ईश्वरीय ज्ञान के साथ पैदा किया गया जिस की मदद से उनको लोगों को हिदायत देना थी, यह सब कुछ किताबों की शक्ल मे था। इन सब किताबों को, (सिवाय कुरान के) इंसानो ने तबदील कर (बदल) डाला केवल कुरान ऐसा है जिस में न तो आज तक कोई तब्दीली (बदलाव)हुई है और नही यह किसी नये रूप में सामने आया है।

पूर्व पूस्तके इब्राहिम को (नामावलीयां तथा तख़्तियां), मुसा को (तौरते और तख़्तियां): दाऊद को (जबूर), ईसा को (बाईबिल) और मोहम्मद (कुरान)भेजी गयी ।

कुछ और इमकान (संभावना) को खारिज (इंकार) नही करता है कि कुछ और पवित्र पुस्तकें दूसरे नबीयों पर उतारी गयी । लेकिन कुरान में किसी का जिक्र नहीं है। सुन्नाह (मोहम्मद के तौर तरीके़) के बयान के मुताबिक नबीयों की तादाद (गिनती) हजारों में है लेकिन इन सब में केवल २५ महान नबीयों का जिक्र (वर्णन) कुरान में मिलता है। इनमें कुछ पवित्र पुस्तकों के साथ तथा कुछ बगैर पवित्र पुस्तकों के भेजे गये ।

इन पूर्व पुस्तकों की इनके असली शक्ल (रूप) में स्वीकार करना और ग्रहण करना ही इस्लाम में ईमान कहलता है। यह सब अल्लाह, उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों (पैग़म्बरों) पर ईमान लाये (कथन) उसके रसूलों में से किसी में हम तफ़रीक़ (मतभेद) नहीं करते'' (कुरान २,२८५)

कुरान पाक

''यह आलीशान किताब हम ने आप (मोहम्मद)की तरफ उतारी है कि आप लोगों को अंधेरों से उजाले की तरफ़ लायें उनके परवर दिगार को हुक्म से ज़बरदस्त और तारीफों वाले अल्लाह की राह की तरफ''(कुरान १४,१)

कुरान दुसरी किताबों से भिन्न है क्यों कि यह पूरी तरह अल्लाह के दिये हुऐ शब्दों से लिखा गया है। यह किताब अल्लाह के फरिश्ते जिब्राईल के द्वारा पैग़म्बर मोहम्मद को भेजी गयी । लगभग २३ वर्षो के वक्फे़ मे पूरी हुई । इसकी शुरूआत ६११ ईसवी में हुई । मुहम्मद अनपढ़ थे पर जिबग्राईल उनको तीन बार पढ़ने का हुक्म दिया,

''अपने अल्लाह का नाम लेकर पढ़, जो देखभला करने वाला है जिसने पैदा किया, जिसने इन्सान को (केवल) खून के थक्केसे पैदा किया, तू पढ़ता रह तेरा अल्लाह बड़ा करम वाला है जिसने कलम के ज़रिये इल्म सिखाया, जिस ने इन्सान को वह सिखाया जिसे वह नही जानता था'' (कुरान ९६, १-५) कुरान, मोहम्मद के साथ रहने वालों द्वारा लिखा गया था। उन लोगों ने इसको ज़बानी याद (हिफ्ज़) कर लिया था। कुरान में ११४ बाब (अध्याय) हैं जिन की अल्लाह के हुक्म से जिब्राईल ने तरतीब (क्रम) का़यम की ।

मुसलमान की नज़र में कुरान अल्लाह के दिये हुऐ अल्फ़ाजों का नाम है जिनको बदला नहीं जा सकता। अल्लाह ने इसको सीधे इन्सानियत के हवाले किया है यह अल्लाह का शब्द है इसलिये इसको झुठलाया नहीं जा सकता। कुरान बुनियादी तौर पर एक मार्गदर्शक (हिदायत करने वाला) है जो जीवन के मक़सद (उद्देश) का मार्गदर्शन करनेवाला है और इसको उस अल्लाह ही ने भेजा है जिसने जीवन दिया है। इसके पढ़ने वाले को कुरान बताता है कि हम अपने आप से अपने खानदान से और अपने समाज से कैसा सुलूक (व्यवहार) करें। कुरान यकीन, रब के साथ रिश्ते, अख्लाक (आचरण) और मुल्कों का एक दूसरे के साथ कैसा सुलूक हो, की शिक्षा देता है। यह इससे पहले आने वाले पैग़म्बरों, पवित्र पुस्तकों, कयामत के दिन और जो न दिखायी दे, के बारे में बताती हैं यह ब्रहमाण्ड, जीवों तथा माहौल के साथ व्यवहार की हिदायतों का बयान करती है।

कुरान, औरतों, बच्चो, दीनदार लोगों औरा ऐसे लोगों के लिय जिन्होने आखरी पैगाम को कबूल करने से इंकार किया इन सब के लिये वाजेह (साफ) तौर पर इन्सानी हुकुक (मानवधिकारों) को यकीनी बनाया है। यह किताब जरूरतमंदों , पशुओं, मुल्कों की तारीख (इतिहास), शुभ अशुभ, साईंसी निशानात के बारे में बतायी है ।

अल्लाह के सच्चे शब्दों को महफुज (सुरक्षित) रखने के लिय कुरान को इबादत के लिये हमेशा अरबी भाष में पढ़ना चाहिये क्योंकि शब्दों के सच्चे अर्थ सिर्फ अरबी भाषा में ही मिल सकते है । फिर भी दूसरी भाषाओं में मायनों का खुलासा किया गया है। लेकिन वे कुरान नही है। बल्कि कुछ संदशों को बयान करेन की कोशिश भर है।

मक्का की पुण्य मस्जिद

इस्लाम में मुसलमानो को तीन पवित्र स्थानों की यात्रा करने की ताकीद की गयी है । मक्का की पावन पुण्य मस्जिद ''हरमैन' मदीना में 'मस्जिदे नबवी' तथा येरूशलम की अल अक्सा मस्जिद । इन मस्जिदों की विशेषताऐं नबी मोहम्मद के निम्नलिखित प्रवचनों (खुतबों) में उल्लेखित है:

''तीन मस्जिदों की यात्रा का इरादा कीजीये : (अल मदीना में) मेरी- मस्जिद के लिये, (मक्का) की पुण्य मस्जिद, तथा (येरूशलम) की अल - अक्सा मस्जिद'' (बुखारी तथा मुस्लिम से)''मक्का की पुण्य मस्जिद में एक वक्त की नमाज़ पढ़ना अन्य मस्जिदों में पढ़ी गयी एक लाख नमाजों के मूल्य के बराबर होती है। मेरी मस्जिद में यह एक हजार नमाजों के बराबर तथा येरूशलम की अल - अक्सा मस्जिद में पढी गयी नमाज़ पांचसो नमाजों के बराबर होती है''(बुखारी से)''बक्का (मक्का) मानव जाति की प्रार्थना (इबादत) के लिय निश्चित किया गया सबसे पहला घर है, जो हर प्रकार के जीवों के मार्गदर्शन तथा बरकतों (आशिर्वादो) से भरा हुआ है। '' (कुरान ३,९६)

मक्का की पवित्र मस्जिद काबा के चारों और बनायी गयी, इस प्रथमतम ग्रह की एकमेव एंव सत्य ईश्वर की प्रार्थना के लिय पवित्र घोषणा की गयी। काबा पत्थरों का एक चौकोर (घनाकार) ग्रह है जो अन्दर से पूरी तरह खाली है। काबा हज़रत आदम द्वारा रखी गयी मूल नीव पर नबी इब्राहिम व उनके पुत्र नबी इस्माईल ने खड़ा किया। काबा के पूर्वी कोने पर एक काला पत्थर है जो अल-हजर अल-असवद कहलाता है। हज़रत इब्राहिम व उनके बेटे द्वारा बनायी गयी असली इमारत का सिर्फ़ यह पत्थर ही बाक़ी बचा है।

काबा एक दिशा है। मुसलमान अपनी नमाज़ के लिय इस ओर मुंह करके खड़े होते है। काबा और ना ही काला पत्थर पूजा की चीजे़ हैं बल्कि यह एक केन्द्र बिन्दु का काम करता है जो मुसलमानों को प्रार्थना में एकीकार करता है। ''अल्लाह को काबा और उसके चारों ओर की तमाम चीजों से ज्यादह एक मुसलमान का रक्त (जीवन) प्रिय है''(सही से)

अलमदीना की मस्जिदे नबवी

इस्लाम में प्रथम मस्जिद मदीना में नबी मोहम्मद द्वारा वर्षे ६२२CE में बनायी गयी थी। यह एक बहुत साधारण रचना थी ।जोकि कच्ची ईटों तथा पत्थरों से बनी हुई थी। मस्जिद के करीब नबी मोहमम्द का साधारण सा घर था जिसमें बाद में नबी मोहम्मद तथा उनके दो साथियों, अबु - बक्र अस-सिद्धिक तथा उमर इब्न अल-ख़ताब को दफ़नाया गया था। इसके निरन्तर विस्तार ने सोर इतिहास में नबी की इस मस्जिद का आज एक श्रेष्ठ एंव भव्य (आलीशान) वास्तुकलात्मक कृति (रचना) बना दिया है। इस मस्जिद के करीब एक सुन्दर हरे रंग का गुबंद है जिसके नीचे नबी मोहम्मद की समाधि को देखा जा सकता है। इस मस्जिद के आश्चर्यचकित कर देनेवाली आकृतियों में २ किलोमीटर लम्बाई की अरबी सुलेख की नक़्क़ाशी की श्रेष्ठकृति, ८० टन वज़न के सरकने वाले गुंबद तथा आगन में मस्जिद की छत के बराबर की छतरियां है जो मौसम की दशानुसार खोली तथा बंद की जा सकती है।

अलअक़्सा मस्जिद

''तारीफ के क़ाबिल है वह जो उसके गुलाम (नबी मोहम्मद) को रात मे अल-मस्जिद अल -हरम से अल-मस्जिद अल-अक़्सा अपने निशानों को दिखाने ले गया जिसके चारों तरफ़ उसने बरकतें रख दीं। बेशक वह सुनने और देखने वाला है'' (कुरान १७,१)

येरूशलम शहर की अल-अक्सा मस्जिद इस्लाम का तीसरा अतिपुण्य स्थल है। यह मुसलमानों के दिलों को बहुत प्रिय है जैसा कि काबा बनने से पहले यह पहली मस्जिद थी जिसमें वे प्रार्थना (नमाज़) के लिये गये । यह इसलिये भी कि नबी मोहम्मद को इस मस्जिद में रात्री का सफर (इस्र व मेराज) के लिये ले जाया गया था और यह वह स्थान है जहां उन्होंने इबादत में समस्त नबीयों की अगुवाई की थी।

अल-अक्सा मस्जिद मुक़म्मल आदरणीय पुण्य स्थल है, जिसमें ना केवल हज़रत उमर की मस्जिद शामिल है बल्कि पत्थर की शिलाओं का गुबंद और पत्थर के बाड़े के अन्दर २०० से अधिक महत्वपूर्ण चिहन एवं स्थान स्थित है। इसका क्षेत्र लगभग १,४४,००० वर्ग मीटर है इसी लिये यह येरूशमल के प्राचीन नगर के १/६ वें भाग पर फैली हुई है। इस चहारदीवारी से घिरे हुऐ पुण्य स्थान पर नमाज़ पढ़ने का सवाब (लाभ) किसी आम मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के सवाब (लाभ) से ५०० गुणा ज्यादह होता है।

कुरान के मोजजे (चम्तकार)

जब एक किताब भ्रुण (जनीन) के भ्रुणीय विकास (जनीनयात) के बारे में बताती है, बादलों और बारिश के बनने के बारे में बताती है, सम्रदों और उनकी सतह से मीलों नीचे उनके गुणों और विशेषताओं के बारे में बताती है और यह सब कुछ इंसान के सुक्ष्मदर्शी, जहाज़ या पनडुब्बी का अवष्किार किये बगैर, तो पढ़ने वाले के दिमाग़ में कुछ सवाल जरूर पैदा होना चाहिये। कुरान का नुजूल (प्रकटीकरण)तकरीबन १४०० साल पहले अरबी मरूस्थल के बीच एक मनुष्य पर हुआ । एक ऐसे मनुष्य पर जो न तो पढ़ सकता था और न लिख सकता था। यह सब कुरान की चम्तकारिक प्रकृति के बारे में किस तरह के सवालात उठाते हैं ?

हम आज विज्ञान और आधुनिक तकनीक के युग में लगातार नई हक़ीकतों (तथ्यों) और आयामों के बारे में सीख रहे है। केवल एक मिनट का वक़्त सोचेन के लिये लिजिये कि धर्म (शरियत) ने हमारे चारों ओर के समजा को समझने में क्या किरदार (भूमिका) अदा किया है तो आप को यह जान कर ताज्जुब होगा कि हमने कुरान से क्या क्या जानकारी हासिल की है।

भ्रुण (जनीन)

नशोनुमा (विकास) की शुरूआती अवस्थाओं से कुराण भ्रुण (जनीन) के विकास की सही सही अक्कासी (चित्रण) करता है। पहले यह एक बूंद की हालत में होता है इसको ''नुत्फ़ा'' कहते है। यह एक शुक्राणू (नर बीजाणू) और एक अण्डाणू (मादा बीजाणू) के मिलने से बनता है। यह युग्मनज है और एक बूंद की शक्ल का होने की वजह से 'नुत्फ़ा' कहलाता है। इसके बाद की हालत को ''अलाक़ह'' कहते है अरबी भाषा में इसके तीन अर्थ है, जोंक, लटकती चीज़ और रक्त का थक्का।

भ्रुण न सिर्फ़ जोंक से मिलता और जुलता होता है बल्कि यह मां के खून से जोंक की तरह खाना हासिल करता है। जैसे जैसे यह बढ़ता है मां के पेट से अपने आप को जोड़ लेता है जैसे कि यह पेट में लटक रहा हो, और अलक़ाह की अंतिम अवस्था वह है कि जनीन मां का बहुत सा खून अपने अंदर ले लेता है लेकिन यह खून उसके अंदर की रगों में दौड़ना शुरू नहीं करता है और एक थक्के की तरह दिखायी देता है।

इसके बाद की हालत को 'मुदग़ाह' कहलाती है । अरबी भाषा में इसका अर्थ है चबाया हुआ । भ्रुण (जऩीन) की बढ़ती हुई रीढ़ की हडड्ी एक दांतो द्वारा चबायी हुई चीज़ से मिलती जुलती होती है। इसके बाद की अवस्था ''इजा़म'' या हडिड्यों का बनना कहलात है। कुरान में इसके बाद की अवस्था हडिड्यों के चारों तरफ़ मांस (गोश्त) के बनने ओर गोश्त के जरिये हडिड्यों को ढ़क लेने का बयान बिल्कुल सही सही दर्ज है।

कुरान में भ्रुणीय विकास (जनीनयात) का रहस्योदघाटन १४०० वर्ष पूर्व कर दिया था। आधुनिक विज्ञान ने इस की खोज सुक्ष्मदर्शी के अविष्कार के बाद पिछले कुछ दशकों पूर्व १७ वीं शताब्दी में की। ऐसा माना जाता है कि शुक्राणू में मनुष्य का लघु-रूप छुपा है।

''यक़ीनन हमेन इंसान को मिटट्ी के निचोड़ से बनाया और फिर हमने इसको शुक्राणू में स्थापित करके हिफ़ाज़त की जगह रखा - एक बूंद को एक पक्की जगह (गर्भश्य) में रखा, फिर हमने इेस जमा हुआ खून बना दिया । फिर इस थक्के से मास (गोश्त का लोथड़ा) बनाया, फिर गोश्त के के टूंकडें में हडिड्यां पैदा की, फिर हडिड्यो को गोश्त पहना दिया, तब हमने नये सृजन (पैदाईश)का विकास किया । अल्लाह बड़ा पाक बरकतों वाला तथा अच्छा ख़लिक़ (सृष्टिकरता) है। (कुरान २३, १२-१४)

फिरऔन का डूबना

सन्देष्टा मूसा के कालमे फिरऔन एक बङि शक्ति था जिसने अल्लाह के होने पर विश्वास करने को अस्वीकार किया था। वह जिद्दी और अभिमानी था और अपना जीवन सन्देष्टा के जीवन को त्रासित करने में ब्यतीत किया था। वह डूब जाएगा कहकर मूसाने उसको सावधान किया फिरभी उसने विश्वास करना स्वीकार नहीं किया। जब मृतयु निश्चित तौरपर उसके सामने आ खडी हुइ तभी उसने अल्लाह पर विश्वास की घोषण किया।

‘‘ तथा हमने इस्राइल की सन्तान को समुद्र से पार कर दिया। फिर उनके पीछे -पीछे फिरऔन सेना के साथ अत्याचार तथा क्रूरता के उद्देश्य से चला, यहाँ तक कि जब डूबने लगा, तो कहने लगा, मैं ईमान लाता हूँ कि जिस पर इस्राईल की सन्तान ईमान लायी हैं, कोइ उसके सिवाय पूजने योग्य नहीं तथा मैं मुसलमानों में से हूँ।

(उत्तर दिया गया कि) अब ईमान लाता है ? तथा पहले अवज्ञा करता रहा तथा भ्रष्टाचारियों में सम्मिलित रहा। तो आज तेरे शव को छोङ देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए शिक्षा का चिन्ह हो जाये जो तेरे पश्चात हैं। तथा वस्तूतः अधिकाँश हमारे प्रमाण -चिन्हों से विमुख हैं ’’। ; कुर्आन : १० : ९०- ९२ द्ध

पहाडों के बारे मैं

पहाडों की जड़े खूटियों की तरह है जो जमीन की सतह को मज़बूती से पकेड़ रहती है और इसको स्थिरता प्रदान करती है।

जब खे़मे (तम्बू) बनाने में खूटियों और रस्सियों तथा दूसरे सामानों का प्रयोग खे़मे को खड़ा करने के लिया किया जाता है तो आप न देखा होगा कि खूंटियां जमीन में धंस कर गायब हो जाती है। केवल कुछ भाग ही ज़मीन के ऊपर बाकी रहता है। यह वह तकनीक है जो खें़मे को सहारा देने व उसको गिरने से बचाने के लिय प्रयोग होती है। कुरान ने पहाड़ों को खूंटियो की तरह बयान किया है। इस सिद्धान्त का परिचय सर जार्ज ऐरी (SIR GEORGE AIRY) ने मात्र १८६५ में दिया। भू-विज्ञान में आधुनिक प्रगति यह स्पष्ट करती है कि पहाड़ों की सतह पर स्थिरता से कायम रखती है। अल्लाह कुरान में फ़रमाता है।,‘‘क्या हमने जमीन को आराम करने का फर्श नही बनाया और पहाड़ों को मेखे़ (खूंटियां) नही बनाया ’’(कुरान ७८, ६-७)

‘‘और उसने ज़मीन में पहाडों को गाड़ दिया है ताकि तुम्हे हिला न दें और (रचना की) नहरों और रास्तों को बना दिया ताकि तुम अपनी मंज़िल को पहुंचो’’ (कुरान १६,१५)

समुद्रों के बारे में कुरान

जहां दो समुदंर मिलते है वहां एक कुदरती ओट (हिजाब) मौजुद है। साईसदानो ने हाल मे ही साबित किया है कि जहाँ पानी के दो वजूद एक दूसरे के क़रीब आते हैं वहां इन्सानी आँख को न दिखाई देनेवाली एक रूकावट (पर्दा या ओट) मौजूद होती है जो इन पानीयों की नमकीनीयत, हरारत, घनत्व को बरक़रार (बाक़ी) रखता है और इनमें किसी को एक दुसरे में समाने (घुसने) से रोकता है। इस बात को भुमध्य सागर और अटलांटिक महासागरों के एक दूसरे के मिलने की जगह पर देखा परखा जा सकता है। जहां मीठा पानी खारी कड़वे पानी से मिलता है।

इस परदे या हिजाब या रूकावट (ओट) का बयान कुरान में १४०० साल पहले ही कियाजा चुका है, ‘‘’उसने दो दरिया जारी कर दिये, जो एक दूसरे के करीब होते हुऐ भी एक हिजाब (अवेराघ) की मदद से अपनी अपनी सीमाओं में रहते हुये बह रहे है’’ (कुरान ५५, १९-२०)

‘‘और वही है जिसने दो दरिया आपस में मिला रखे हैं यह है मीठा और मजे़दार और यह है खरी कड़वा और इन दोनो के बची एक हिजाब और मज़बूत ओट कर दी है’’ (कुरान २५,५३)

और मजे़दार बात यह कि खलीज (खाड़ी) में पर्ल डाईवर्स (PEARL - DIVERS) को इस कुदर्ती मज़हर (दर्शक - सूचक) के लिये जाना गया। अरब खाड़ी के खारी पानी में समुद्री सतह से लगभग चार से ६ः मीटर नीचे मीठे पानी की सरिताऐं पायी जाती है। लम्बे महीनों के दौरान पर्ल-डाईवस्र समंदर में इन सरिताओ की अधिकता होती है जहां यह अपने मीठे पानी के जखीरे (भण्डार) को बढ़ने के लिये डुबकियां लगाती है। इनमें की एक मशहूर सरिता सऊदी अरब के जुबेल शहर के उत्तर पूर्व में एन-इग़मीसा (AIN - IGHMISA) के नाम से मशहूर है।

बादलों के बारे में कुरान

बादलों के नवीनतम अध्यन के बाद साईसदानो का क़यास है कि बादलों का बनना और शक्ल अख्तियार करना एक ख़ास उसूल के तहत होता है। इसकी एक मिसाल कपासी बादलों का बनना और यह किस तरह बारिश करते है, ओले बरसाते और बिजलियाँ कड़काते है, यह सब निम्नलिखित चरणों में होता है छोटे छोटे कपासी बादल हवा के द्वारा एक जगह जमा किये जाते है। जहां वे एक दूसरे से जुड़ जाते है और एक बड़ा कपसी बादल बनाते हैं फिर वे एक दूसरे के उपर जमा होते है और उनका आकार ऊचाई में बढ़ता जाता है बादलों में फैलाव ठंडे वायु मण्डल में होता है। जल की बारीक बूंदों व बारीक बर्फ बनता है जब इनक वज़न की मिक़दार (मात्रा) एक ख़ास बिन्दू पर पहुँचती है तो यह ज़मीन पर गिरने लगती है।

‘‘और वह आस्मानों से (बादलों) के पहाड़ नीचे भेजता है जिसमें बर्फ़ के तूफ़ान है (ओले) फिर वह जिस पर चाहे इन्हे बरसाये और जिनसे चाहे इन्हे हटा ले। बादल ही से निकलने वाली बिजली की चमक ऐसी होती है कि लगता है अब आँखो की रोशनी ले चली’’ (कुरान २४,४३)

कुरान के लिसानियाती (भाषाई) मोजज़े (चमत्कार)

कुरान पाक ऐसे समय में उतारा गया जब लोग कविताओं और शब्दों का प्रयोग अपने सुनने वालों को चकाचौंध कर देने के लिये करते थे जिसके नतीजे में लोगों के बीच मुकाबले शुरू हो गये और अरबी ज़बान (भाषा)में ऊँचे दर्जे की खुश बयानी (काक पटुता) का ज़हूर (सामने आना) हुआ।

मोहम्मद ऐसे इन्सान थे जो 'वही' (प्रकटीकरण) हासिल करने के लिये अपनी जिन्दगी के चालीस सालों तक अरब के कवियों से दूर रहे, लेकिन वे शब्द जो उन पर अल्लाह की तरफ़ से उतारे गये और जो उनके साथीयों के द्वारा आगे बढ़ाये गये वह बहुत अच्छे, बहुत बड़े और ज़्यादह तनासुबवाले (बालबद्ध) थे जो लोगों ने पहले कभी नही सुने थे।

जो कुरान के असल होने पर शक करते हैं अल्लाह ने उनके लिये एक चुनौती रखी है कि वे कुरान के बाबों (अध्यायों) जैसा एक बाब तैयार करके दिखायें जो कुरान के बाब के जैसी खूबसूरती, खुशज़बानी, शानो शौकत, हिकमत की क़ानून साज़ी, सच्ची मालूमाँत, सच्ची पेशीनगोई (भविष्यवाणी) और दूसरी मुकम्मल (पूर्ण) विशेषताएँ रखनेवाला हो। तब से लेकर आज तक इस चुनौती को किसी ने भी पूरा नहीं किया। अल्लाह कुरान मे फ़रमाता है, ''क्या यह लोग कुरान में गौर नही करते ? अगर यह अल्लाह के अलावा किसी और की तरफ़ से होता तो इसमें यक़ीनन बहुत कुछ इख्तिलाफ़ात (प्रतिवाद) पाते'', (कुरान ४,८२)

''हम ने जो कुछ अपने बंदे (नवी मोहम्मद) पर उतारा है (कुरान) इसमें अगर तुम को शक हो और तुम सच्चे हो तो इस जैसी एक सूरत (अध्याय) तो बना लाओ, तुम को छुट है अल्लाह के अलावा तुम अपने मददगारों को भी बुला लो, लेकिन अगर ऐसा नहीं किया और तुम ऐसा हरगिज़ नही कर सकते तो (इसको सच्चा मानकर) उस आग से डरो.....।'' (कुरान २,२३-२५)

''और जब कुरान पढ़ा जाया करे तो इसकी तरफ कान लगा दिया करो और खामोश रहा करो उम्मीद है कि तुमपर रहमत हो।'' (कुरान ७,२०४)

''(यह) एक बरकतों वाली किताब है जिसे हमने आप पर (ऐ मोहम्मद) इस लिये उतारा है कि लोग इस की आयतोंपर ग़ौर और फ़िकर करें और बुद्धिमान इस स नसीहत हासिल करें। ''(कुरान ३८,२९)

दिमाग़ के आगे के हिस्से के बारे में

यह जानना दिलचस्प है कि दिमाग़ के विभिन्न भागों (हिस्सों) के काम करने के तरीकों की खोज साईसदानो ने सन् १९३० मे शुरू की। दिमाग़ का एक हिस्सा जो सामने की तरफ स्थित होता है (PRE-FRONTAL CORTEX) कहलाता है। साईसदानो ने खोज की है कि यह भाग अच्छे और बुरे सुलूक (व्यवहार) करने की मसूंबाबंदी और सच और झूठ बोलने जैसे कामों को करता है। अल्लाह यह सब बताने के लिये हमारा चयन १४०० वर्ष पहले किया।

नीचे की आयत में अल्लाह हम को ख़बरदार करता है कि वह इन्सान को उसके सर के अगले हिस्से या पेशानी के बाल पकड़ कर उठायेगा, ''यक़ीनन अगर यह बाज़ नहीं रहा (नही छोड़ता है) तो हम इसके पेशानी (सर का अगला भाग) के बाल पकड कर घसीटेंगें। ऐसी पेशनी जो झूठी और ख़ता (पाप) करने वाली है'' (कुरान ९६, १५-१६)

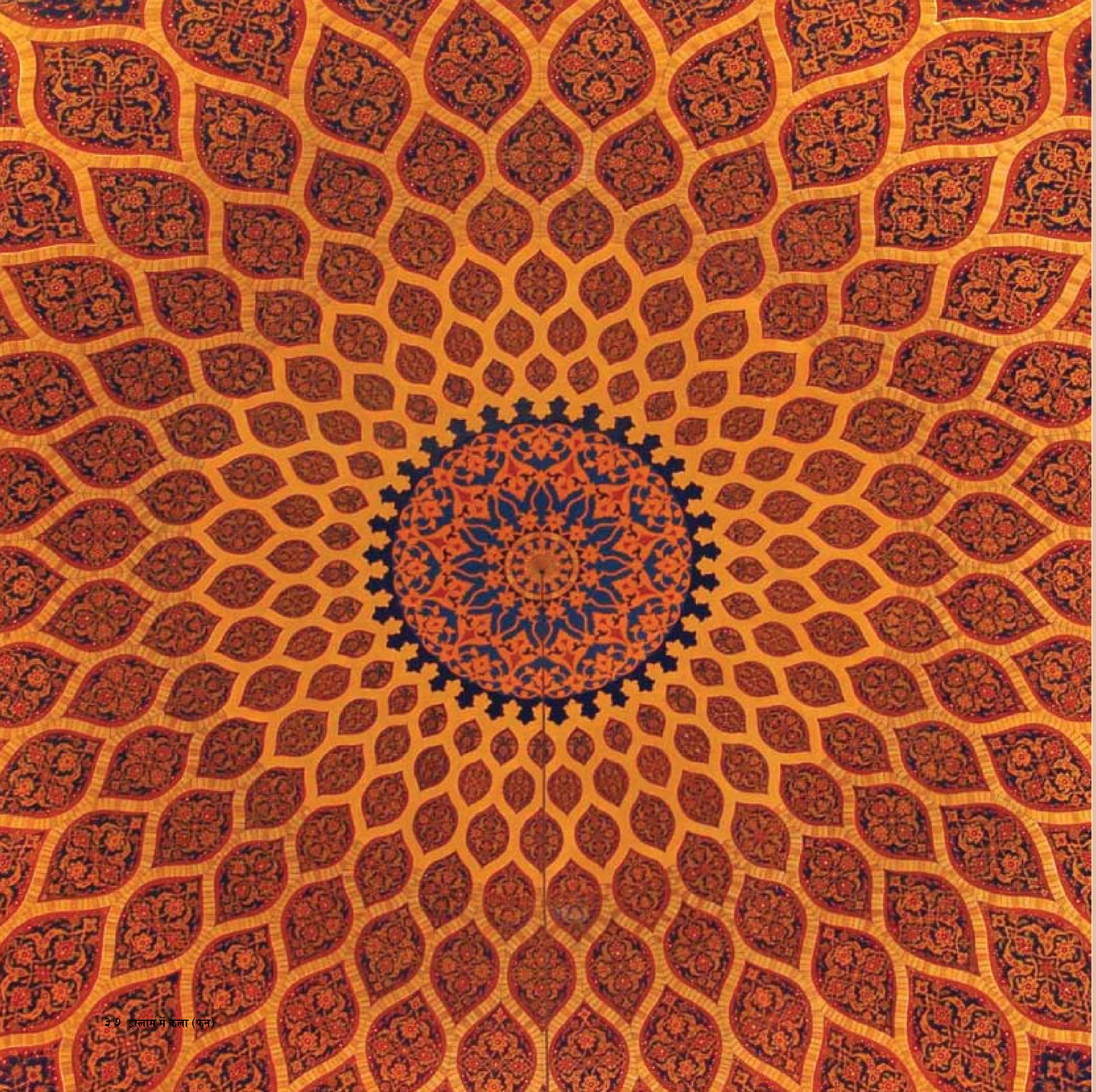

इस्लाम में कला (फ़न)

''अल्लाह खूबसूरत है और खूबसूरती को पसंद फ़रमाता है।'' यह अल्फ़ाज़ नबी मोहम्मद ने १४०० सौ साल पहले कहे थे। उन्होने यह भी कहा था ''' जब तुम कुछ अच्छा करते हो तो अल्लाह इसको पसंद फरमाता है '' (मुस्लिम से बयान)

नाबीयों क ऐसे अक्वाल ने (कथन) मुसलमानों को उनकी इबादत की जगहों, घरों और जीवन में हर रोज इस्तेमाल की चीजों को संवारने, उनको खूबरसूरत बनाने और सजाने का जोश मुहईया (उपलब्ध) कराया। इस्लामी फ़ने-तामीर (वास्तुकला) और सजाने की कला आज भी अच्छी तरह जिन्दा है और दुनिया के बहुत से मुस्लिम हिस्सों में इसकी क़दर की जाती है।

मुस्लिम कला ने शुरू से ही दुनिया का एक दिलकशन मुतावाज़िन (नपा तुला) नज़रिया पेश किया है। इस्लामी कला ने कई शुरूआती रचनाओं जैसे ज्यासितिय, अराबस्क, फुल पंक्तियां और खुशनवीसी (सुलेख) जो सब आपस में गूंथ दी गयीं के प्रयोग करने का अनूठा तरीका ईजाद किया है।

''मुसलमान हर चीज़ के वजूद में तवाजुन और हम-आहंगी (मेल) का क़ायल है (मानता है)। कोई चीज़ यूँ ही अचानक नहीं पैदा होती। सब कुछ एक बुद्धिमान औ रहम दिल आयोजक (मनसूबा साज़)(मनसूबा बनानेवाला) के मनसूबे (योजना) का हिस्सा है। इस्लामी कला की कुछ ज़रूरी चीज़े हैं।

- इस्लामी कला चीज़ो के सार व अर्थ की अक्कासी को तलाश करती है।
- दस्तकारी और सजावट के कामों को कला के स्तर तक उठाया।
- खुशनवीसी (सुलेख) इस्लामी कला का एक बड़ा हिस्सा है।
- फुल पक्तियों और ज्यामितिय आकृतियों को एक दूसरे में मिलाने की कला में इस्लामी कलाने एक खास किरदार निभाया है।
- इस्लामी कला केवल धार्मिक कला नहीं है बल्कि इसमें हर प्रकार की कलाऐं शामिल है।

खुशनवीसी (सुलेख)

मुसलमानों का कुरान के लिये प्यार व गहेर अदब की वजह से खुशख़ती (सुलेख) की कला ने जन्म लिया और जल्दी ही तमाम मुस्लिम दुनिया में अपने ऊरूज (उन्नत्ति) को पंहुच गयी। कुरानी आयतों (पंक्तियों) ने मस्जिदों, महलों, घरों कारोबारों और कुछ सार्वजनिक स्थानों को सजाया। अक्सर (प्रायः) सुलेख का इस्तेमाल सजावटी नक्शा निगार के साथ सबसे ज़्यादह मुक़द्दस (पावन) और कीमती (बहुमुल्य) चीज़ों को सजाने के लिये किया गया।

कई सदियों में मुस्लिम जगत के विभिन्न इलाकों में कई लिपियों (लिखावटों) ने जन्म लिया। अरबी खुशख़ती (सुलेख) के ख़ास अन्दाज़ निम्नलिखित हैं।

कुफ़िक़ (KUFIC)

कुफिक़ क़रीब क़रीब वर्गाकार औ रतीखे कोनो वाली लिखावट है। इसकी पहचान इसके भारी, वाज़े (स्पष्ट) तथा ज्यामितिय अन्दाज़ से होती है। इसके अक्षर आमतौर से दबीज़ (मोटे) होते है और पत्थर या धातु पर नक्क़ाशी के लिये, मस्जिदों की दिवारों पर नक्शन व कुतबे कुन्दा (खोदने) के लिये या रंगों से लिखने के लिये, और सिक्कों पर हर्फ़ (शब्द) बनाने के लिये यह माकूल (उपयुक्त) लिपि है।

नस्ख़ (NASKH)

नस्ख़, अरब संसार की शायद सबसे ज्यादह पसंदकी जाने वाली लिखावट है। यह एक प्रवाही (घसीट) लिपी है इसके अक्षरों के बीच के अनुपात (तनासुब) के लिये कुछ बुनियादी कानूनों का पालन होता है। नस्ख़ आसानी से पढ़ी जाने वाली, साफ़ लिखावट है जिसको वरिय (तरजीही) अन्दाज़के तौर पर लिपिबद्ध तथा छापने के लिये अपनाया गया था। इसकी अनगिनत शैलियों (अन्दाज), किस्में पैदा हुई जिनमें तालीक़ (TA'LIQ), रिक़ (RIQA') और दिवानी (DIWANI) शामिल हैं। यह नये ज़माने की अरबी लिखावट की जनक (जन्मदाता) बन गयी।

थूलूथ (THULUTH)

यह लिपी सजावटी लिखावटों में सबसे ज़्यादह महत्वपूर्ण है और इसको लिपि शैलीयों (अंदाजों) का राज कहा जाता है। यह आमतौर से शीर्षको (उनवानों), धार्मिक नक्श व कुतबों, शदी ख़िताबों (राजसी उपाधियों) और शिलालेखों को लिखने के लिये प्रयोग की जाती है।

तालिक (TA'LIQ)

यह लिपी ख़स तौर से फ़ारसी भाषा की जरूरतां को पूरा करने के लिये बनायी गयी और आज भी ईरान, अफ़गानिस्तान तथा भारतिय उपमहाद्वीप में इसका बहुत इस्तेमाल होता है। तालिक़ एक कोमल (नरम) और सुन्दर लिखावट है।

दिवानी (THE DIWANI)

बहुत अधिक प्रवाही (घसीट) और बहुत ज्य़ादह बनावट वाली लिपी है। इसके अक्षर बग़ैर किसी क़ानून और स्वर व्यजनों के एक दूसरे से जुडे होते है। इसकी उत्पत्ति तुर्कों के प्रारंभिक शासन काल (१६ वी शताब्दी से प्रारंभिक १७ वीं शताब्दी) के दौरान हुई।

खुशनवीसी (सुलेख) कुछ और क़िस्में भी हैं जो ज़्यादह मशहूर नही है लेकिन किसी भी तरह कम खुबसूरत नहीं जैसे रिका (RI'QA), महक़क (MUHAQQAQ) रेहानी (RAYHANI), इजाज़ा (IJAZA) और मोरोक्कन (MOROCCAN)

इस्लामी फ़न-ए-तामीर (वास्तुकला)

इस्लामी दुनिया की निर्माण कला (फ़न-ए-तामीर) को तमाम इतिहास में उसकी रूहानी बुनियाद (अध्यात्मिक आधार) यानी कुरान से मज़बूती मिली है।

इस्लामी शहरों में मुहज़्ज़िब (शहरी) इलाक़े दस्तकारों की नस्लों के साथ बहुत लम्बे समय से वजूद में आचुके थे जिनके तजर्बो (अनुभवों) ने माहौल में विभिन्न प्रकार के फ़नों (शिल्पों) को शामिल कर दिया।

उस वक़्त के ख्वायती शहर मदरसों (इस्लामी स्कूलों), सौंक़ (बाज़ारों),महल और घर और सबके बीच एक मस्जिद के फ़नेतामीर से जोड़कर ख़ूबसूरत शहर बनाने के बारे में सोचा गया।

समय के साथ साथ मस्जिदों और महलों की तामीर और सजावट वसीह (बृहत) होती गयी। शिल्प कला ने लम्बी छलांगे लगायीं, एक गुंबद की कल्पना जिसके नीचे इबादत के लिये बड़ी जगह हो, से मस्जिद की दीवारों तक जिस पर अल्लाह की शन में नक्श (कुतबे) खुदे हुऐ हों।

इस शिल्प में मुश्तरक मौजूं (संयुक्त विषय) इन्सानों और जानवरों की शबीह (रूप) को इस्तेमाल न करना है। आप पायेंगें कि खुशनवीसी (सुलेख) का प्रयोग करते हुऐ सजावट का ज़्यादह झुकाव अल्लाह की तारीफ़ में लिखे हुऐ शब्दों, तहरींरो पर है।

एक मिसाली (आदर्श) इस्लामी घर के कुछ़ खास हिस्से होते है एक ढ़का हुआ आगन जो ख़ानदान के लोगों की बाहरी लोगों और ख़राब मोहौले से हिफ़ाज़त (बचाये) करे। आप देखेंगे कि बाहर से यह मकान बहुत सादा होता है जबकि अन्दर के हिस्सों पर ख़ास तवेज्जा दी जाती है। वक़्त पड़ने पर इस चहारदीवारी के अंदर एक दुसरा घर भी बनाया जा सकता है। जो बढ़े हुऐ खानदान के प्रयोग में आ सके।

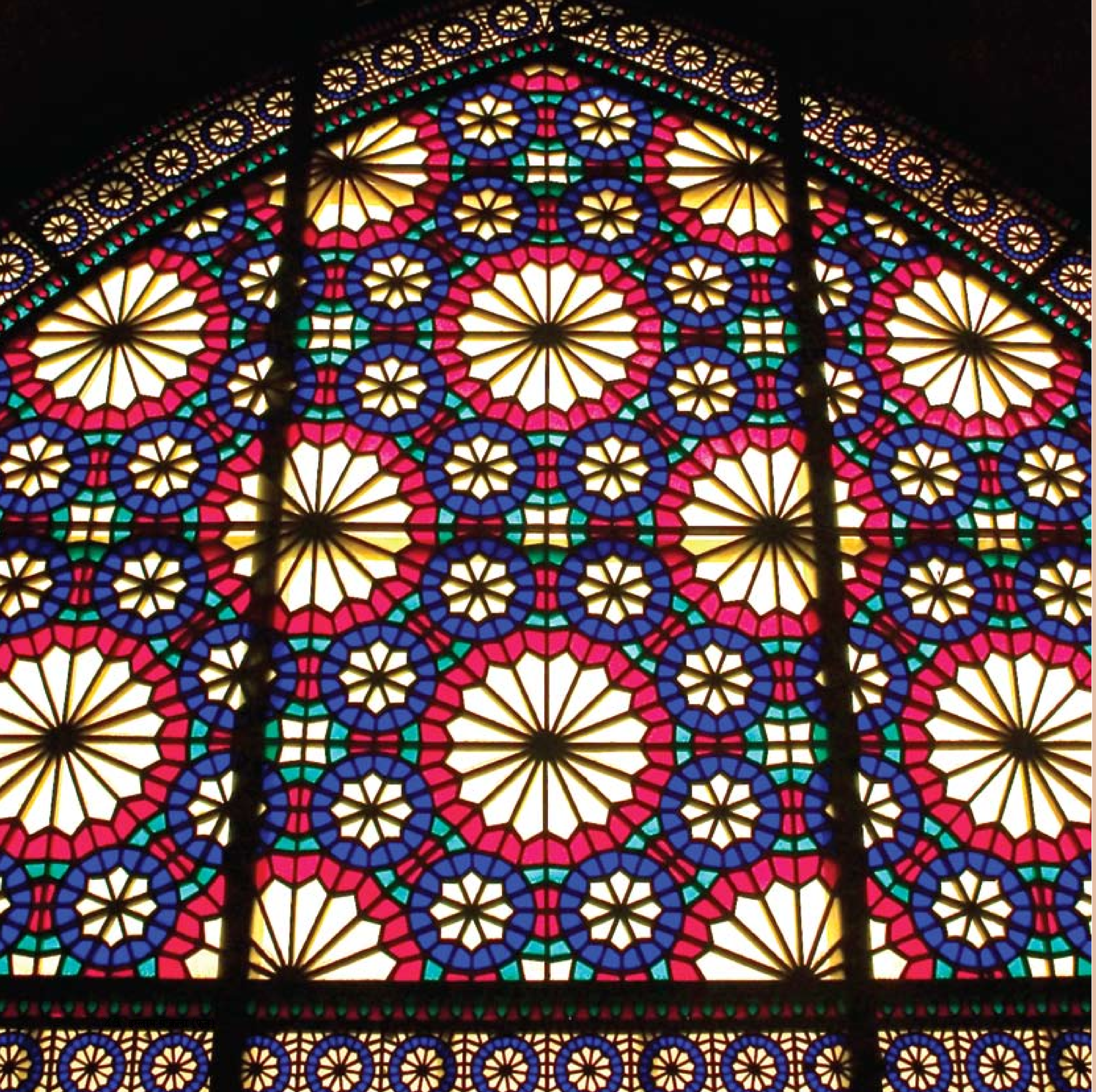

इस्लामी रंगीन शीशे

इमारतों की सजावट में रंगीन शीशे के प्रयोग का सबसे पुराना वर्णन ७वीं शताब्दी मिस्त्र में मिलता है। बाद में नयी आसारेक़दीमा (पुरातात्विक) खोजों ने इसके साथ नवीं शताब्दी में मिस्त्र और वियतनाम के दरमियान होने वाले रंगीन शीशे के कारोबार को भी जोड़ दिया। फिर भी युरोपा में ११५० और १५०० के बीच रंगीन शीशे की कला अपने अरूज (बुलन्दी पर थी) जब गिरजाघरों की शानदार खिड़कियां इन रंगीन शीशों से बनायी जाती थीं। रंगीन शीशों पर ज्यामितिय शक्लों, खुशनवीशी (सुलेख) और इस्लामी पुष्प सज्जा जैसे विषयों का प्रभाव तुर्क क्षेत्रों में बहुत अधिक था। जब कोई कलाकार हम आहंगी (मेल), एकता, खुबसूरती के तारीखी उसूलों की तमन्ना करता है तो इनको वह शीशे की सतह पर रोशनी और रंगो से कई गहराईयों वाले नक्श औा सजावटें उकेरता है।

इसके उदाहरण हर छोटी बड़ी चीज़ में देखे जा सकते हैं, बड़ी मस्जिदों की सज्जा जैसा कि तुर्की माहिर तामीरात (वास्तुकला का तज्ञ) मीमार सीनन (Mimar Sinan) ने मुस्लिम दुनिया के विभिन्न भागों में की। उनके द्वारा सजोये गये रास्तों पर लगे हुऐ लैम्प जिन्होने मुस्लिम नगरों को सैकड़ों साल पहले जगमगाया था।

बेल बूटे का काम (अराबस्क)

भूमेख या ज्यामितिय आकारों को दोहराने के विस्तृत प्रयोग को बेलबूटे का काम कहा जाता है जो प्रायः पशुओं तथा पेड़ों की अककासी करता है। यह इस्लामी कला का एक तत्व है जो प्रायः मस्जिदों, घरों, बाजारों, होटलों के दरवाज़ो तथा खिड़कियों को सजावट में पाया जाता है। किसी रचना के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले ज्यामितिय आकारों का चयन मुसलमान कलाकार की रचनात्मकता तथा उसकी संसार को परखने की विद्वता पर निर्भर करता था। यह कला सुलेख के साथ यदा कदा ही मिलती है।

इस कला में प्रायः ज्यामितिय आकारों का बार बार इस्तेमाल होता है जो अपने अंदर बहुत से गुप्त अर्थ छुपाये रखती है। उदाहरण के लिये एक सरल 'वर्ग', इसकी चार समभुजाओं द्वारा कलाकार कुदरत के चार महत्वपूर्ण तत्वों धरती, वायु, अग्नि तथा जन को एक चिहन द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। वृत्ताकार आकार कैसे भी सृष्टा की अन्तहीन अभिन्नता (अल्लाह एक है अकेला है) को दर्शाता है।

पर्यावरण (माहौल)

इस्लाम में पर्यावरण तथा मानवजाति के बीच संबंध को स्थिति इस तथ्य पर आधारीत है कि धरती पर प्रत्येक वस्तु अल्लाह की इबादत करती हैं। यह इबादत केवल ओपचारिक अभ्यास, मात्र नहीं है बल्कि उनके कार्यो से ऐसा दिखायी देता है। इसका अर्थ है कि यह मुसलमानों की आस्था विश्वास (यक़ीन) का अंग है कि पर्यावरण को बर्बाद मत करो, इसके अलावा मानव इस भूमण्डल के पर्यावरण के दूसरे वासियों की अच्छाई एंव संपोषण (भोजन आदि) के लिये जिम्मेदार है। जैसा कि यह है कि पशु तथा वनस्पति जगत उनके अपने पर्यावरण को नष्ट नहीं करते है।

वृक्षो का संरक्षण (दरख्तों को मेहफ़ूज़ रखना)

नबी मोहम्मद ने कृषि (खेती) से संबंध रखने वाले साधनों की वृद्वि तथा फ़ायदेमंद माहौल को बढ़ावा देने के लिये कृषि को बढ़ावा दिया था। उनके मुताबिक ''जब कभी एक मुसलमान एक हरा भरा पौधा या वृक्ष लगाता या उगाता है और कोई पशु, मनुष्य या अन्य कोई उसको खाता है तो इसका हिसाब उसके भलाई के कामो की तरह होगा''(अल-बुख़ारी)

नबी मोहम्मद ने सर्वप्रथम पर्यावरण आरक्षण क़ायम किया था जिसके तहत वृक्षों को काटा नहीं जा सकता था और पशुओं की हत्या नहीं की जा सकती थी। उन्होनें पूरे मदीना को इसके लिये सुरक्षित किया, यहां किसी पेड़ को काटा या उखाड़ा नहीं जा सकता था और केवल इतने आकार की लकड़ी काटी जा सकती थी जो एक ऊंट को हांकने के लिये काफ़ी हो: वह कहते है : ''यह पुण्य एंव पावन स्थल है इसका एक भी पेड़ नहीं काटा जा सकता सिवा उस आदमी के जो अपने ऊंट चरा रहा है'' (अल-बुख़ारी से वर्णित)

उन्होनें यह भी कहा: ''मैने मदीना जो दो जली हुई चटट्ानों के दरम्यान मौजूद है के पेड़ो (वृक्षो) को काटने से रोका है'' (अल-बुखारी से वर्णित)

जल

जल स्त्रोतों, रास्तों तथा अन्य सार्वजनिक पर्यावरण क्षेत्रों को प्रदूषित करने पर प्रतिबंध वगैरह इस्लाम के कुछ ऐसे निर्देष हैं जिनका मक़सद माहौल को सेहतमंद तथा प्रदूषण मुक्त रखना है। इस्लाम प्रत्येक व्यक्ति (नागरीक) का यह कतर्व्य बताता है कि वह माहौल की हिफ़ाज़त करें इसकी अशुद्धता की निन्दा करें।

''तुम्हारी तुमसे पहले की पीढ़ीयों (तुमसे पहले के लोगों में) कुछ ऐसे लोग क्यों नहीं सामने आये जो पृथ्वी पर भ्रष्टाचार (बुराई) के ख़िलाफ़ उपदेश देते?'' (कुरान ११, ११६)

''ठहरे (रुके) हुऐ पानी में किसी को मूत्र त्याग से रोको''(अल - बुखारी)

''तीन कामों से बचो जो लोगों पर गुनाह लाती है : जलस्त्रोत में, रास्तों तथा साये की जगह पर मूत्र का त्याग''(अबु-दाऊद)

पशुओं की देख-रेख

इमाम इब्न हाज़्म अपनी पुस्तक अल-मुहल्ला में कहतें हैं :

९''पशुओं पर दयालुता परोपकार तथा भक्ति है : और जब एक मनुष्य पशु की खुशहाली के लिये सहायता नहीं करता तो वह पाप तथा अक्रामकता को बढ़ावा दे रहा है तथा सर्वशक्तिमान ईश्वर की नाफ़रमानी (अवज्ञा) कर रहा है''

पशुओं को भोजन एंव जल न देना, तथा फल देने वाले वृक्षों तथा पौधों को जल देने को उपेक्षा करना ईश्वर के अपने शब्दों में कहे अनुसार धरती पर भ्रष्टाचार है तथा वृक्षों एंव नस्लों (संतति) का सर्वनाश है।

ईश्वर ने एक वेश्या को इसलिये क्षमा कर दिया था क्योंकि जब उसने रास्तें में कुँऐ के पास एक कुत्ते को हांफ्ते हुऐ देखा कि वह प्यास के कारण मरने के करीब है तो उसने अपनी जूती उतारी तथा उसको अपने दुप्पटे से बांधकर कुँऐ से उस कुत्ते के लिऐ जल निकाला। इसलिय ईश्वर ने उसको उसके इस अच्छे काम के लिय क्षमा कर दिया। (अल-बुख़ारी)

नबी उसको बददुआ देता है जो जीवित वस्तु की हत्या मात्र मनोरजंन (जैसा कि शिकार) के लिये करता है (मुस्लिम)

नबी ने पशुओं को मनोरंजन या खेल के आपस में लड़ना सिखाना मप्रतिबंधत किया (अल-तिरमिज़ी)

शहरों को साफ रखना

नबी मोहम्मद लोगों पर अपने शहरों को स्वच्छ रखने तथा प्रदूषित ना करने पर बल दिया करते थे। वे कहते: मुझे मेरे मानने वालों के कार्य दिखाये जा चुके है। दोनो अच्छे तथा बुरे। मैने पाया कि लोगों के चलने वाले रास्तों से नुक़सान पहुँचाने वाली वस्तुओं को हटाना उनके अच्छे कार्यो में से है। (मुसलिम) उन्होने यह भी कहा: आस्था (यक़ीन) की ७० शाखें हैं ... इसमें सबसे आसान किसी रास्ते से नुक़सान पहुचाने वाली चीज़ को हटाना है।(मुस्लिम).

समुदाय (बिरादरी)

नबी मोहम्मद ने किसी व्यक्ति या समुदाय को हानी पहुचाने को निषेध किया जैसा कि वह कहते है: ''स्वयं या किसी दूसरे को हानी नहीं पहुंचायी जायेगी। (अल नववी की चालीस हदीसें)

उन्होने अपने पड़ोसी, कोई पड़ोसी चाहे घर में, सार्वजनिक यातायात में सार्वजनिक स्थान या कार्यालय में हो उसको नुकसान पहुंचाने से रोका। उन्होने कहा: जो भी ईश्वर में तथा कयामत आस्था (यक़ीन) रखता है उसके द्वारा पड़ोसी को आहत नहीं करना चाहिऐ। (अल-बुख़ारी)

इस्लाम में औरतें (महिलाऐं)

इस्लाम ऐसे वक़्त प्रकर किया गया जब सारी दुनिया में ज़्यादातर लोग स्त्रीयों की मानवता को नकार चुके थे । उनको उप-मानव का दर्जा दिया गया था या नहीं परन्तु उनकी उत्पत्ति पुरूषों की सेवा मात्र की वस्तु के रूप में समझी जाती थी ।

इस्लाम ने औरतों के अधिकार जो पतित समाज द्वारा समाप्तकर दिये गये थे स्त्रीयों को वापिस कराये। इस्लाम ने स्त्रियों की गरिमा (इज़्ज़त) तथा मानवता को वापिस दिलवाया और उनको पुरूषों के बराबर का दर्जा दिलवाया। लड़कियों की शिशुहत्या को गैरक़ानूनी बनाया तथा स्त्रीयों को उत्तरधिकार का हक़ दिलवाया जो पहले मौजूद नहीं था। दूसरी चीजों में, स्त्रीयों को अपना व्यक्तिगत सामान रखने का हक़ प्राप्त हुआ था। इसलिए वह अपने पास धन व संपत्ति रख सकती थी। (जिसमें यह ज़रूरी नहीं था कि यह धन वह अपने परिवार पर ख़र्च करें), शादी की रज़ामंदी का हक़ (उसकी मर्जी जरूरी थी), और शादी के बाद भी शादी से पहले के नाम को इस्तेमाल करने का हक़ शामिल थे । वे अब तलाक़, शिक्षा, वोट देने का हक रखती थी। उनको अनेक हक़ हासिल हुऐं जिन्होंने उनको ना सिर्फ़ पुरूषों के बराबर के स्तर तक पहुँचाया बल्कि उनके दर्जे को कई मामलों मे पुरूषों से उंचा कर दिया ।

अबु हरेरा से रवायत है कि एक व्यक्ति नबी मोहम्मद के पास आया और पूछा ''ऐ अल्लाह के पैग़म्बर, इन समस्त लोगों मे सबसे अच्छा इन्सान कौन है जो मेरी दया का हक़दार है और जिसको में अपना अच्छा साथी बनाऊँ ? आप, नबी मोहम्मद ने उत्तर दिया '' तुम्हारी मा '' उस व्यक्ति न पूछा 'उसके बाद'' उन्होने उत्त्र दिया ''तुम्हारी मां'' उसने फिर कहा ''उसके बाद'' आप ने फिर कहा ''तुम्हारी मां'' और उसके (यानी मां) के बाद? नबी मोहम्मद ने उत्तर दिया ''तुम्हारे पिता'' (अल-बुख़ारी और मुस्लिम हदीसों से प्राप्त)

हाल ही में पश्चिम में औरतों को कई अधिकार, अपनी इसके साफ़ उदहारण है, अपनी संपत्ति रखने का अधिकार, अपनी म़र्जी से काम करने और तलाक़ का अधिकार । इन अधिकारों ने १९ वी शताब्दी में कानून का रूप ले लिया था। इससे हट कर कुछ समाजों में, (मुस्लिम समाज को छोडकर) संस्कृति के ग़लत मार्गदर्शन के कारण लड़की के जन्म को आज भी एक बोझ समझा जाता है। गर्भपात द्वारा लड़कियों की शिशुहत्या भी आम है जिससे ऐसे समाजों मे स्त्रीयों तथा पुरूषों की संख्या के मध्य एक बड़ा अंतर पाया जाता है।

औरतों के दर्जे पर इस्लाम का नज़रिया कुरान की निम्नलिखित आयत से संक्षिप्त में वर्णित किया जा सकता है।

''उनके ईश्वर ने उनको जवाब दिया है,'' मैं तुममें से किसी को भी उसके कामों का इनाम देने से कभी नहीं चुकता हूॅं, चाहें नर हो या मादा, तुम एक दुसरे के समान हो (कुरान ३,१९५)

इस्लाम में बच्चों के अधिकार

इस्लाम आने से पहले विश्व के अधिकांश भागों में बच्चों के साथ बहुत अधिक दुर्व्यवहार किया जाता था जिसमें सबसे बुरा व्यवहार जन्म के तुरन्त बाद बच्चों की शिशुहत्या थी। यह प्रथा ग़रीबी के भय से, गढ़े हुए ईश्वरों को बलिदान करने के भाव से या पुत्री के जन्म पर समाज में होनेवाली बदनामी से बचने के लिय की जाती थीं।

कुरान ने समस्त अभानविय प्रथाओं की अस्वीकृत किया तथा बच्चों को अनेक अधिकार दिये, उनको भोजन,वस्त्र दिये जाने तथा सुरक्षा के अधिकार दिये, अपने माता पिता से प्रेम तथा स्नेह पाने का अधिकार, भाई बहनों के मध्य उनके प्रति समान व्यवहार का अधिकार, शिक्षा तथा उपयुक्त उत्तरधिकार का अधिकार प्रदान किया।

कहते है ''आओ मैं वह बताता हूँ जो तुम्हारे ईश्वर ने तुम पर निषेध किया है (वह आदेश देता है) कि तुम उसके साथ किसीको शामिल मत करो, और माता पिताओं को अपने बच्चों से अच्छे व्यवहार के लिय तथा ग़रीबी के कारण अपने बच्चों से अच्छे व्यवहार के लिय तथा गीरबी के कारण अपने बच्चों की हत्या न करने का, हम तुमको व उनको उपलब्ध करायेंगे.......''(कुरान ६,१५)

इसके अलावा बच्चे के दिमाग़ को पोषित करना चाहिये इसके लिय शिक्षा अनिवार्य है। बच्चे का हृदय आस्था से भर देना चाहिय। उचित मार्गदर्शन, ज्ञान और बुद्धि, नैतिकता तथा अच्छा आचरण बच्चे के दिमाग़ में डालना उसके विकास के लिये जरूरी है। '' अल्लाह से डरो और अपने (छोटे या बड़े) बच्चों से अच्छा सुलूक (व्यवहार) करो (समान इन्साफ़ के साथ)'' (बुख़ारी तथा मुस्लिम हदीसों से प्राप्त)

इस्लाम में मानवधिकार एंव सजातिय अल्पसंख्यंक

इस्लाम ने मावन समाज को १४ शताब्दी पूर्व मानवधिकारों की आर्दश संहिता प्रदान की। इन अधिकारों को मक़सद मानव जाति को आदर तथा गौरव प्रदान करना तथा शोषन, अन्याय तथा दमन का निराकरण करना था। इन अधिकारों को नबी मोहम्मद के अंतिम उपदेश (खुतबे) में संक्षिप्त किया गया है और अत्यधिक विचार के बाद इनको प्रथम मानवधिकारों के रूप में घोषित किया गया । यह अधिकार समस्त समुदायों चाहे मुसलमान हों या ना हों,नर, मादा, वह जो युद्ध में है या शांति के समय में के लिय उनके अधिकारों की अल्लाह की ओर से गारयंटी दी गयी ।

''समस्त मानवजाति आदम व हव्वा से पैदा हुऐ हैं। एक अरबी मनुष्य किसी ग़ैर-अरबी से उत्तम नहीं होता है ओर ना ही एक ग़ैर - अरबी किसी अरब के मनुष्य से उच्च है। इसी प्रकार एक गोरी चमड़ीवाला काली चमड़ी वाले से उत्कृष्ट है और ना ही काली चमड़ीवाला एक गोरी चमड़ीवाले से उत्तम है। केवल उसकी भक्ति व अच्छे कार्यो के अलावा '' (अंतिम उपदेश (खुतबे)उद्धरित)

इस्लाम में मानवधिकार की जडें इस यकीन ने मज़बूत बनाई है कि अल्लाह और सिर्फ़ अल्लाह कानून बनाने एवं तमाम मानवधिकारों का बनानेवाला है। इन मानवधिकारों की दिवय उत्पत्ति के कारण जो अल्लाह ने प्रदान किये है, कोई शासक, सरकार, सभा या सत्ता इनको किसी भी प्रकार कम उपेक्षा नहीं कर सकता और ना ही इनको छोड़ा जा सकता है।

यह मानवधिकार मुस्लिम समाज में रहनेवाले गैर-मुस्लिमों के लिये भी सुस्पष्ट है। नबी मोहम्मद मदीना में बीमार लोगों, में मुसलमानों के साथ साथ यहूदियों को भी देखने जाते थे । जब एक यहूदी की जनाज़ा आप के निकट से गुज़रा तो आप आदर से खड़े हो गये । अस्पतालों में धर्म और सामाजिक प्रतिष्ठा को जाने बग़ैर लोगों को भर्ती (उनका इलाज किया जाता था। सरकारी स्तर पर ईसाई तथा यहूदी सत्ता की मुख्य धारा में पहुंच गये थे । मुस्लिम पाठशालाओं, विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में ईसाइयों तथा यहूदीयों के दाखले होते थे तथा सरकारी खर्च पर उनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था होती थी ।

स्पेन मे धर्मधिकरण के समय में यहूदी जो मुस्लिम बहुल स्पेन में ७०० वर्षो तक मुसलमानों के साथ एकता व सम्पन्नता से रहते आये थे मुसलमानों के साथ स्पेन से पलायन कर रहे थे, उनके लिये मुस्लिम जगत एक सुरक्षित आश्रय (ठिकाना) था।

'' जो कोई भी एक निर्दोष आत्मा की हत्या करता है। जो एक जीवित की हत्या करता है या समाज का विनाश करता है यह ऐसा ही कि जैसे वह समस्त मानवता की हत्या करता है। तथा जो काई भी एक निर्दोष आत्मा की रक्षा करता है तो वह ऐसा ही है जैसे उसने समस्त मानवता की रक्षा की है'' (कुरान ५,३२)

मानवीय सभ्यता की उन्नती में इस्लाकम का योगदान

परिचय (तआरुफ़)

आप को यह जानकर ताअज्जुब होगा कि इस्लामी साम्राज्य को बनने में १०० सालों से भी कम समय लगा है। जो इस तरह के प्रकटीकरण में लगने वाला इतिहास का सबसे कम समय है। स्थापना के बाद तहज़ीब में इसकी तरक्क़ी आश्चर्यजनक है, इससे साईसं की दुनियां की लगभग १००० साल तक अगुवाई की। हमारे दिमाग़ में यह सवाल उठना चाहिये कि बिजली की सी तेज़ी से इस्लाम की इस तरक्क़ी के पीछे वह कौन सी प्रेरणा देनेवाली ताक़त थी और यह लगभग ५ सदयों (शताब्दी)तक लगातार क्यों तरक्क़ी करता रहा ?

इस्लाम से पहले अरब प्रायदीप तरक्क़ी के उच्च बिन्दू पर नहीं था बल्कि इसका झुकाव पुराने रितीरिवाजों की ओर था। कुरान के प्रकट होने के बाद इस्लाम का यह पैग़ाम मिला जिसमें इस्लाम मानव जाति को लगातार सोचने, सीखने,परखने तथा अल्लाह के जरिये इन्सानों के लिय पैदा किये गये तोहफों, जिनका प्रयोग वह अपने आपको धरती के रक्षक के पात्र के रूप में तलाश करने का तकाज़ा करता है।

''बताओः क्या वह जो जानते हैं, अन्जान लोगों के बराबर हैं? केवल उनको नसीहत दी जायेगी (जो लोग) समझ रखते हैं। (कुरान ३९,९)

कई शताब्दियों तक कुरान की भाषा (अरबी), साईसीं खोजों, तथा प्रगति के लिये एक अंन्तराष्ट्रीय सहारा थी। जैसा कि आज अंग्रज़ी भाषा है योरूप के लोग जो भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र,गणित, खगोलशास्त्र या औषधि विज्ञान सीखना चाहते थे मुस्लिम विश्वविद्यालयों में जमा होते थे । खास तौर से उस समय के मुस्लिम बहुल स्पेन में।

सीखने का यह शौक़ उनके बर्दाश्त की ताक़त के अंदाज की वजह से ठीक रहा और धर्म को परे रखते हुऐ उन शिक्षार्थीयों ने अपनी उत्साहित शिक्षार्थीयों जैसी पहचान बनायी ।

Timeline

600 CE — 613 Hijra of Prophet Mohammad — 700 — 800 — 900 — 1000 — 1100 — 1200 — 1300 — 1400 — 1500

पहले अस्पताल की ७०७ ब्र में दमिश्क में स्थापना हुई थी।

(८ वीं शताब्दी) अल-फ़राज़ी की ऊंचाई मापने के यंत्र का निर्माण किया जो आज के आधुनिक अंयि कम्प्यूटर से पहले खोजा गया एक महत्वपूर्ण खगोलीय गणना का यंत्र था।

(८ वीं शताब्दी) मुसलमान रसायन शास्त्री जाबिर इब्न हय्यान ने शोरे के अम्ल की खोज की तथा माप बनाने, छानने,उर्ध्वपातन,पिघलाना, आसवन , निस्तापन,क्रिस्टलीकरण की क्रियाओं का वर्णन किया।

९ वी शताब्दी में मोहम्मद बिन मूसा अल-ख़्वारिज़्मी ने बीजगणित को उन्नत किया और अपना नाम अलगोरिथ्म दिया।

९वी शताब्दी - ख़लीफ़ा अल - मामून ने पृथ्वी के की २४०० मील होने की गणना की यह माप आज के आधुनिकतक विधी से की गयी माप गणना के निकट है।

(८५०-९२९) अल-बत्तानी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ज्या तथा को ज्या कि अभिव्यंजना का प्रयोग किया।

(८६५-९२५) अर-राज़ी (राज़ीज़) ने चेचक और इसके टीके की तरकीब पर सर्वप्रथम रिपोट पेश की।

८६५-९२५ अर राज़ी ने पता लगाया था कि सितारे हरकत करते हैं तथा पृथ्वी से विभिन्न दूरियों पर स्थित है।

८६९-९३१ में डॉक्टरों ने बग़दाढ़ में लायसेंसी चांज के लिये दरख्वास्त दी।

९५४९ब्र में मुसलमान खगोल शास्त्रीयों ने बग़दाद के अक्षांश की ३३२० की संख्या की गणना की थी जिसमें केवल १०. तक ग़लती की संभावना थी ।

९वी शताब्दी में अज-जहरावी (अबुल कासिस) जो एक मुसलमान शल्य चिकित्सक थे, ने लगभग २०० शल्य क्रिया के औजारों का परिचय कराया इनमें से कुछ तो आज भी प्रयोग होने वाले औज़ारों के नमूने थे इसके अतिरिक्त चीरा लगाने से पहले निशानाा लगाने के तरीकें को आज भी शल्य क्रिया में प्रयोग किया जाता है।

(९४०-९९८) अबुल वफ़ा ने उन्नतांशमापी (ऊंचाई की डिग्री नापनेवाला यंत्र) की खोज की। बिल्कुल ऐसी ही ख़ोज डेनिशन खगोल शास्त्री टायको ब्राहो ने लगभग १००० वर्ष पश्चात की थी।

(१० वीं शताब्दी) इब्न यूनुस अल-मसरी ने लोलक की खोज की तथा इसकी दोलन गति को प्रमाणित किया।

इब्ने सीना (अविसिना) ने १४ जिल्दों में 'औषधि विज्ञान के क़ानून' नाम की पुस्तक लिखी। इसको औषधि विज्ञान के इतिहास में उनकी अति प्रसिद्ध पुस्तकों मे शुमार किया जाता है और योरूप में यह ७०० वर्षों से अधिक तक यह एक स्तरीय औषधिय संदर्भ पुस्तक थी।

(१० वी शताब्दी) मोहम्मद बिन अहमद नें शून्य की कल्पना की खोज करके गणित में अमूल परिवर्तन ला दिया (अरबी में सिफ़र जिससे सिफ़र (Cipher तथा Dicipher) जैसे शब्दों की उत्पत्ती हुई) और इसके ३०० वर्ष पश्चात ही यूरोप ने शून्य की परिकल्पना को समझना शुरू किया था।

१० वी शताब्दी : मोतिया बिन्दु की शल्य क्रिया सर्वप्रथम इराक में की गयी ।

(९७३-१०५०ब्र) अल-ब्रुरूनी आधुनिक त्रिकोणमिति की नीव रखनेवालों में प्रथम थे।

(९७३-१०५०) अल-बिरूनी ने प्रस्तुत किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, पृथ्वी की परिधि की गणना की और ग्लोब के किसी भी बिन्दू से साईसी कानून के मुताबिक़ मक्का की दिशा को स्थापित किया।

(१२ वीं शताब्दी) अल-ज़ज़ारी ने क्रेन्क शाफ़ की खोज की जो चक्रिय गति को रेखीय गति में बदलती है और जो आधुनिक संसार की अधिकतर मशीनों का केन्द्र बिन्दु हुआ करती है, अंशतः आंतरिक दहन वाला इंजन।

(१३ वी शताब्दी) इब्नुन नफ़ीस ने, विलियम हारवे जो रक्त - परिक्रमा के अन्वेषक कहे जाते हैं,से ३०० वर्ष पूर्व ही रक्त परिक्रमा को बयान किया था।

(१३ वीं शताब्दी) अबुल हसन अल-मराक़शी ने १३० के स्थलों की एक सूची बनायी थी।

(१५१३) पीरी री 'जो एक तुर्क थे, ने ''अमरीका का मान चित्र'' नाम से एक मशहूर मानचित्र की रचना की थी । जिसमें साफ़ तौर से अंटारटिका और साथ ही दक्षिण अमरीका के पर्वतों को भी दर्शाया है।

औषधि विज्ञान

मुसलमानों में स्वास्थ की देखरेख का शौक़ सीधे इस्लाम द्वारा दी गयीं। शिक्षाओं से जुड़ा है। ऐसा उल्लेख है कि नबी मोहम्मद ने कहा ''अल्लाह के समस्त मानने वाले जो अल्लाह से बीमारीयों के इलाज की कामना करते है, उनके लिये है कि अल्लाह ने कोई बीमारी उसके इलाज के बगैर पैदा नहीं की है'' (अबु-दाऊद से उल्लेखित) मुस्लिम डॉक्टरों ने अवधि विज्ञान के क्षेत्र में अनुपम योगदान दिया है। दमिश्क में ७०७ ब्र में पहले अस्पताल की स्थापना हुई थी, और उसके तुरन्द बाद बड़े बड़े इस्लाम बहुल शहरों में अस्पतालों की स्थापना हुई जिनमें बीमारीयों की रोकथाम, इलाज तथा बीमारी की पहचान वग़ैरह के अभ्यास में पहल हुई।

गणित

गणित विज्ञान में मुसलमान गणितज्ञों ने अर्थयोग उन्नति प्राप्त कि। उन्होने विश्व को शून्य, बीजगणित, प्रतीक गणित का परिचय कराया। उन्होंने सर्व प्रथम ज्या तथा को - ज्या का प्रयोग किया। त्रिकोणमिति, गणित की एक प्रथक शाखा के रूप में प्रकट हुई। वे ग़ैर -यूक्लाईडियन रेखागणित की प्रगति पर बहुत प्रभावर रखते थे । उनकी उपलब्धियों ने ही उच्च स्तर की गणित के द्वार खोले।

खगोल विज्ञान

''और यह वही है जिसने तुम्हारे लिये सितारों को स्थापित किया जो धरती और समुद्र (जल,थल)के अंधेरों में तुम्हारा मार्गदर्शन कर सकें। हमने उन लोगों के लिये निशानियों का विवरण कर दिया है जो ज्ञान रखते हैं । कुरान (६,९७) मुसलमतानों के कारनामों में एक खोज है 'SUN'S APOGEE' (सुर्य की परिक्रमा में पृथ्वी से अधिकत दूरी पर स्थित बिन्दू) । उन्होंने दिखायी देनेवाले सितारों के मानचित्र बनाये और उनके अरबी नाम दिये, सूरज और चांद की तालिका में सुधार किया और वर्ष की लम्बाई को नियत किया ।

रसायनशास्त्र

मुसलमान विद्यार्थीयों ने धातुओं को मिला कर सोना चांदी और जीवन द्रव्य बनानेवाले रसायनज्ञान को ग़लत साबित करते हुऐ आधुनिक रसायन शास्त्र की नीवों को स्थापित किया। मुसलमान औषधिय शास्त्रीयों की ज़्यादातर खोजें आज के आधुनिक समय के रसायन शास्त्र का एक भाग बन गये हैं। वास्तव में रसायन शास्त्र में प्रयुक्त अंग्रेजी के अधिकतर शब्दों की उत्पत्ति अरबी भाषा से हुई हैं जैसे क़ाफर,अक्सीर, क्षर तथा शरबत आदि शब्द है।

भूगोल

जब योरुप/यूरोप में ऐसा विश्वास था कि पृथ्वी सपाट है तो ऐसे समय में मुसलमान भूगोल की शिक्षा में ग्लोब का प्रयोग करते थे। १२ वीं शताब्दी में मुसलमान भूगोल शास्त्री अल-इदरीसी ने कहा हैः पृथ्वी एक गोले की तरह गोलाकार है और पानी इससे प्राकृतिक सतुंलान के द्वारा बिना किसी बदलाव के इस से चिमटा (स्थिर) रहता है। इस्लाम के पैग़ाम को संसार में फैलाने के कर्तव्य ने इस्लाम में भूगोल सीखने के शौक़ की चिगांरी पैदा की ।

इंजीनियरी (अभियांत्रिकी)

इंजीनियरी के क्षेत्र में मुसलमान इंजिनीयरों का मूल्यवान योगदान है। अल -जज़ारी ने एक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होने : विभिन्न श्रेणीयों में पचास यांत्रिक खोजों का वर्णन किया। इसके अतिरिक्त बनू मूसा ने ''क़ाबिल ईजादों की पुस्तक'' लिख कर एक बड़ा काम किया इसमें उन्होने कुल १०० ईजादों तथा उनका किस प्रकार उपयोग किा जाये, का वर्णन किया है। कुछ अविष्करों में वाल्व,तैरनेवाला वाल्व, प्रतिपुष्टि नियंत्रक, कार्यबद्ध मशीन मायावी उपकरण, स्वयंत्र व्यवस्थित लैम्प शामिल हैं।

व्यापार/धन/सिक्के

व्यापार ने मुस्लिम समाज में एक बड़ी भूमिका निभाई है। कुछ इतिहासकारों का कथन है कि एक समय में लगभग ८५० मुस्लिम जलपोत चीन के कैन्टन बदंरगाह की गोदी में रूके रहते थे। इस्लामिक सिक्के काफ़ी दूर, स्कैन्डिनेविया तक मिलते थे। एक स्वर्ण ब्रिटिश - जर्मन मूल का सिक्का जिसके एक ओर मरसिया के राजा आफ़ा रेक्स का नाम तथा दूसरी ओर मुसलमानो की आस्था की घोषणा अंकित थी। आधुनिक धनादेश (चैक) की उत्पत्ति आरबी के 'सक़' से हुई, एक लिखित आदेश जो सामान की प्राप्ती के समय भुगतान के स्वरूप की जाती है जिससे ख़तरनाक इलाकों से धन के परिवहन से बचा जा सकें।

नबी मोहम्मद (अल्लाह की उनपर शांती रहे) का अंतिम घर्मोपदेश (खुतबा)

शनिवार ७ मार्च ६२३ CE
संसार में मग्ना कारटा, अधिकारों के विधेयक तथा यू.एन.मानवधिकार संहिता से पूर्व होनेवाली मानवाधिकार घोषणा।

‘‘ऐ लोगों जैसा कि तुम इस महिने, इस दिन, इस शहर को पुण्य समझकर इसका आदर करते हो वैसे ही प्रत्येक मुसलामन के जीवन तथा सम्पत्ति को पुण्य घरोहर जान कर उसका आदर करो सामान जो तुम्हो सौपा गया था उसको उसके असली मालिक को लौटा दो। किसी को चोट मत पहुंचाओ ताकि तुम को कोई चोट न पहुंचाये। याद रखो बेशक (वास्तव में) तुम अपने ईश्वर से मिलोगे तब वह तुम्हारे कार्यो का हिसाब करेगा। अल्लाह ने तुम पर ब्याज़ को हराम किया है इसी कारण ब्याज़ के समस्त क़रारनामे अब से छोड़ दिये (समाप्त) कर दिये जायेंगे। तुम्हारी पूंजी तुम्हारी अपनी है अपने पास रखो। तुम्हारे साथ कोई नाइंसाफी नहीं होगी और ना ही तुम पर इसको थोपा जायेगा। अल्लाह का फ़ैसला है कि अब कोई ब्याज नहीं होगा...

‘‘ऐ लोगों, यह सच है कि निश्चित ही तुम्हारे औरतों के प्रति कुछ अधिकार हैं परंतु उनके भी तुम पर अधिकार हैं। याद रखो तुमने उनको अल्लाह की मर्ज़ी तथा अनुमती से अपनी पत्नि बनाया है अगर वे तुम्हारे अधिकारों का आदर करती हैं तो उनका अधिकार है कि उनको रहमदिली से भोजन तथा कपड़े दिये जायें। अपनी स्त्रीयों से अच्छा व्यवहार करो और उनके लिये रहमदिल रहो क्योंकि वह तुम्हारी साथी हैं और वचनबद्ध सहायक हैं। और यह तुम्हारा अधिकार है कि वे (स्त्रिंया) तुम्हारे घरों में किसी को दाख़िल होने की इजाज़त ना दें जिनको तुमने मना किया हो और कभी भी अशुद्ध न हों (पाकदामन रहें)। ...

‘‘ समस्त मानवजाति की उत्पत्ति हज़रत आदम तथा हौव्वा से हुई है। एक अरबी मनुष्य किसी ग़ैर-अरबी से उच्च नहीं और ना ही एक ग़ैर -अरबी किसी अरबी से उच्च है। एक सफ़ेद चमड़ी वाला काली चमड़ी वाले से अच्छा नही है और नाही एक काली चमड़ी वाला सफ़ेद चमड़ी वाले से उत्तम है सिवाय अच्छे कार्यो तथा भक्ति के। याद रखो हरेक मुसलामन दूसरे मुसलमान का भाई है और यह कि मुसलमान भाईचारे की रचना करनेवाले हैं। ऐसा कुछ भी जायज़ नहीं जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को आज़ादी और मर्ज़ी से नहीं देता है। इसी वजह से अपने आप पर जुल्म मत करो...

‘‘ऐ लोगों मेरे बाद कोई नबी या पैग़म्बर नहीं आयेगा और ना ही किसी नयी आस्था (विश्वास) का जन्म होगा। इस कारण अच्छी तरह विवके से सोचो ऐ लोगों और इन शब्दों को समझो जो मैं तुम तक पहुंचा रहा हूँ। मैं अपने पीछे दो चीज़े छोड़ जाऊंगा, ‘कुरान’ और मेरी मिसाल (उदहारण) ‘सुन्नत’ और यदि तुम इनका पालन (अनुसरण) करोगे तो तुम कभी भी राह से नहीं भटकोगे। ...

‘‘तमाम लोग जिन्होने मेरी बातें सुनी वे मरे शब्दों को दूसरों तक आगे पहुंचायेंगे और वे उनसे आगे वालों की, और मेरे शब्दों को सीधे मुझसे सुनने वालों की अपेक्षा आख़िर के लोग मेरी बातों को ज्यादह अच्छी तरह समझ सकेंगे। मेरे गवाह रहना, ऐ अल्लाह कि मैं ने तेरा पैग़ाम (संदेश) तेरे लोगों तक पहुंचा दिया।

हज़रत उमर का क़रारनामा (प्रंसविदा) ओहदनामा

जब उमर इब्ने अल-खुताब (दूसरे खलीफ़ा) ने एक मुस्लिम फ़ौज के सरदार के रूप में ६३८CE में येरूशलम में प्रवेश किया तो उन्होंने ग़रीबी के प्रतीक के रूप में नंगे पांव शहर में प्रवेश किया । कोई खून खराबा नहीं हुआ था। जो जाना चाहते थे उनको उनके सामान के साथ सुरक्षित जाने की इजाज़त दी। जो रूकना चाहते थे उनको उनकी जान, माल, इबादतगाहों की सुरक्षा के साथ रहने की इजाज़त दी गयी। उन्होने आत्मसमर्पण किये हुऐ शहर के मुख्य दण्डधिकारी पैंटरियास्क सोफ़रोनियस के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था कि प्रतिदिन की पांच नमाज़ों में से एक नमाज़ को पवित्र सेपुल्चर के गिरजाघर में अदा किया जाये, और आने वाली सालों में मुसलमानों द्वारा उनकी याद में इस गिरजाघर को मस्जिद में तबदील करने के प्रयास को भी अस्वीकार कर दिया था।

''शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा रहम करने वाला है और बड़ी कृपा करने वाला हे। यह अल्लाह के माननेवालों के सेनापति अल्लाह के गुलाम उमर की ओर से इलिया (येरूशलम) के वासियों के शांति और सुरक्षा का आश्वासन है। मैं तुम को, जो स्वस्थ है, अस्वस्थ है और समस्त धर्मिक समाजों के लोगों को तुम्हारे जीवन,संपत्ती, गिरजाधरों और शूलीयों की सुरक्षा का आश्वासन देता हूँ। तुम्हारे गिरजाघरों पर अधिकार नहीं किया जायेगा, उनको तोड़ा नहीं जायेंगा और ना ही उनको या उनका कोई हिस्सा तुम से लिया जायेगा। तुम्हारे धर्म में तुम्हारा दमन नहीं किया जायेगा और न किसी को आहत किया जायेगा...

इलिया के लोगों को एक कर (टैक्स) (जज़िया) (एक ख़ास टैक्स जो ग़ैर - मुस्लिमों को देना था जो मुस्लिम शासन में रह रहे थे और नागरिकता के लाभ तथा सेना से मुक्ति का लाभ ले रहे थे) देना था जैसा कि शहरों में रहनेवाले अदा करते है...

जो कोई यहां से जायेगा उसके जीवन तथा सम्पत्ति की सुरक्षा का आश्वासन दिया जायेगा जब तक की वह अपने सुरक्षित आश्रय तक न पहुँच जाये। जो कोई यहां रहना (बसना) चाहेगा यहां सुरक्षित रहेगा इस हालमत में कि उतना ही कर का भुगतान करेगा जितना इलिया की जनता करती है। इलिया की जनता का कोई भी व्यक्ति अपने गिरजाधरों से अपनी संपत्ति, शूलीयों तथा रोमवासियों के साथ जाने के इच्छुक हैं तो उनको उनेक जीवन, गिरजाधरों , शूलीयों की सुरक्षा की गारण्टी दी जायेगी जब तक की वे अपने सुरक्षित आश्रय तक नहीं पहुंचते। और जो जहां बसने को चुनते हैं तो वे ऐसा कर सकते है जिसके लिये उनको उतना कर चुकाना होगा जितना इलिया के लोग चुकाते हैं। वह जो कोई भी रोमवासीयों के साथ जाना चाहता है ऐसा कर सकता है और वह जो कोई भी जो अपने निवास स्थान और स्वजनों में लौटना चाहता है, ऐसा कर सकता है उनसे उनकी फ़सल के तैय्यार होने तक कुछ भी नहीं लिया जायेगा। इस करारनामे के अश (जो इसमें लिखे हुऐ हैं) को अल्लाह का है उसके नबी, खलीफ़ाऔर (आस्तिकों) की ज़मानत है लेकिन यदि वे (इलिया के लोग) उन पर जो देना वाजिब (जज़िया कर) है उसका भुगतान करते है।''

इसके गवाह है: ख़लिद इब्नुल वहीद, अर्ब्दुरहमान इब्न' औंफ़, अम्र इब्नुल - आस और मो-आविया इब्न अबी - सुफ़ीया वर्ष१५ ᴴमें तैयार तथा लागू किया गया ।